1:3-25

उद्धार, विश्वास का परिणाम

(भाग 1)

प्रारंभिक आयतों से यह स्पष्ट है कि पतरस के दृष्टिकोण में उसके पाठक सीधे इस्राएल की विरासत में खड़े थे। वे परमेश्वर के "चुने हुए" लोग थे। यद्यपि दोनों यहूदी और अन्यजाति उसके पाठकों में सम्मिलित थे, दोनों ही यीशु मसीह में होकर बने संबंध के द्वारा ही परमेश्वर के चुने हुए थे। प्रेरित के शब्द परमेश्वर के लोग होने की पुराने नियम की समझ में गहराई से जाते थे, परन्तु केवल पुराने नियम की धारणाएं पर्याप्त नहीं थीं। उसके पाठकों को नया जन्म मिला। उनकी जीवित आशा यीशु मसीह के पुनरुत्थान पर आधारित थी। उनकी विरासत अनन्तकाल की थी, स्वर्ग में सुरक्षित थी। विश्वास के द्वारा, वे अन्त समय में उद्धार के प्रकट किए जाने को देख रहे थे।

"जीवित आशा के लिए नए जन्म पाए"
(1:3-5)

3हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, जिसने यीशु मसीह के मरे हुओं में से जी उठने के द्वारा, अपनी बड़ी दया से हमें जीवित आशा के लिये नया जन्म दिया, 4अर्थात एक अविनाशी, और निर्मल, और अजर मीरास के लिये जो तुम्हारे लिये स्वर्ग में रखी है; 5जिनकी रक्षा परमेश्वर की सामर्थ्य से विश्वास के द्वारा उस उद्धार के लिये, जो आनेवाले समय में प्रगट होनेवाली है, की जाती है।

आयत 3. पतरस के शब्द ध्यान रखने योग्य हैं उस दृढ़ता के लिए जो उसने परमेश्वर द्वारा इस्राएल को दिए प्रकाशन के संबंध में रखी और साथ ही उस से मिले मसीह के नए प्रकाशन के लिए। इस्राएल के धर्मपरायण लोग बहुधा उचित समझते थे कि प्रोत्साहन या प्रशंसा के शब्दों का आरंभ **धन्य हो** शब्दों से हो। शालेम के राजा मलिकिसिदक ने "अब्राहम को यह आशीर्वाद दिया, कि परमप्रधान ईश्वर की ओर से, जो आकाश और पृथ्वी का अधिकारी है, तू धन्य हो," और उसमें आगे यह जोड़ा "धन्य है परमप्रधान ईश्वर" (उत्पत्ति 14:19, 20)। दाऊद ने अबीगैल से अपनी बात इन शब्दों से आरंभ की "इस्राएल का

परमेश्वर यहोवा धन्य है" (1 शमूएल 25:32)। भजनकार ने बारंबार इन शब्दों का प्रयोग परमेश्वर की आराधना के लिए किया (उदाहरण के लिए, भजन 28:6; 31:21; 41:13; 66:20; 68:19, 35)। जब यीशु ने यरूशलेम में प्रवेश किया तो भीड़ पुकारने लगी, "धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है" (मत्ती 21:9)।[1] व्याकरण के उसी उपयोग के द्वारा, जैसा पतरस ने किया, जकर्याह ने कहा "प्रभु इस्राएल का परमेश्वर धन्य हो" (लूका 1:68)। और अन्त में, पौलुस ने भी पतरस के समान अभिव्यक्तियों का प्रयोग 2 कुरिन्थियों 1:3 और इफिसियों 1:3 में किया।

ये शब्द इस्राएल के पवित्रशास्त्र की भक्ति और उसके आराधनालय की परंपराओं में स्थापित हैं, परन्तु पतरस ने इससे आगे भी इनकी व्याख्या की। प्रेरित के लिए परमेश्वर का धन्य होना और भी अधिक इस बात में प्रकट हुआ कि वह **हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर और पिता** है। पतरस ने पुष्टि की कि परमेश्वर विशिष्ट रीति से मानव यीशु नासरी का "पिता" है। आगे, यही यीशु नासरी "हमारा प्रभु यीशु मसीह" है। यीशु नासरी का प्रभुत्व, जब वह मानव रूप में था, प्रकट था, परन्तु इसे और भी अधिक इस बात से प्रमाणित किया गया कि उसे परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठकर राज्य करने के लिए प्रतिष्ठित किया गया है। इस प्रकार पतरस ने पुराने नियम के प्रकाशन पर अपना रुख अपने पाठकों को नए की ओर ले जाने के लिए मोड़ दिया।

परमेश्वर की प्रशंसा हो। वह अपने लोगों द्वारा सदा धन्य कहा जाए क्योंकि उसने उनके उद्धार के लिए पहल की है। यह **उसकी बड़ी दया के कारण** है कि प्रेरित तथा उसके पाठक उस संबंध का जो परमेश्वर के साथ उनका है, आनन्द उठाते हैं। वे मसीह की आशा और प्रतिज्ञा में संभागी हैं क्योंकि परमेश्वर ने "अपनी बड़ी दया" में कार्य किया, अपने पुत्र यीशु को उनका तारणहार बना कर उनकी ओर हाथ बढ़ाया।

पतरस ने पुराने पर नए को बनाना जारी रखा। यह कहना कि परमेश्वर धन्य है, और उसकी दया महान है कोई नई अथवा चौंका देने वाली धारणा नहीं थी। ये तो इस्राएल के भूतकाल में दृढ़ता से स्थापित थीं, परन्तु इससे अगला विचार नया था।[2] एक यहूदी परमेश्वर के लोगों की आशीषों में अपने जन्म के द्वारा संभागी होता था। जब उसकी माता उसे जन्म देती और उसका पिता आठवें दिन उसका खतना करता, वह परमेश्वर के लोगों के समाज का भाग बन जाता था। लेकिन पतरस के पाठकों के लिए ऐसा नहीं था! उनका मसीही समाज में सम्मिलित होना किसी शारीरिक जन्म के द्वारा नहीं था, परन्तु एक अन्य और अद्भुत जन्म के द्वारा था। उन्होंने **नया जन्म** पाया था। उनके नए जन्म के द्वारा परमेश्वर ने उन्हें अपने लोगों की गिनती में सम्मिलित किया था।

नए नियम के लेखकों ने गैर-मसीही से मसीही जीवन में परिवर्तित होने का वर्णन करने के लिए मूलभूत शब्दों का प्रयोग किया है। पौलुस के लिए यह अधिकांशतः मृत्यु के समान था। परन्तु मसीहियों द्वारा नए जीवन का आनन्द लेना पौलुस के लेखों से अनुपस्थित नहीं था; उसने रोमियों 6:3, 4 में इस विषय

को उठाया। विश्वासी बपतिस्मा में मानो मारा जाता है जिससे वह जीवन के नए हो जाने में चल सके। वह मसीह के साथ गाड़ा जाता है (συνθάπτω, *सुन्थाप्तो)* जिससे उसके साथ जिलाया भी जाए। नया जन्म अनेक रूपकों में से एक है जो मसीही के परिवर्तित जीवन और परमेश्वर के समक्ष उसके बदले हुए पद को दिखाता है।

यूहन्ना ने यहूदी धर्मगुरू नीकुदेमुस के साथ नए जन्म के विषय में यीशु की वार्तालाप को दर्ज किया है (यूहन्ना 3:1-8)। यीशु ने कहा यह "जल और आत्मा" से लिया गया जन्म है। इस संबंध में जी. आर. बीस्ले-मर्रे निश्चय सही थे जब उन्होंने कहा, "... इन शब्दों ἐξ ὕδατος [*एक्स हुडाटॉस*, 'जल से'] में बपतिस्मा के संदर्भ को छोड़ अन्य किसी संदर्भ को गंभीरता से लेना कठिन है।"[3]

जब पौलुस ने नए जन्म के स्नान को लिखा तब भी बपतिस्मा का जल ही संदर्भ में था, अर्थात, यह स्नान नए जन्म के लिए था (तीतुस 3:5-7)।[4] याकूब 1:18 में नए जन्म की ओर संकेत है। पतरस, पौलुस, यूहन्ना, और याकूब के लिए बपतिस्मा और नया जन्म अविभाज्य थे। जब जे. एन. डी. केली ने टिप्पणी की "बपतिस्मा के विषय [1 पतरस 1:3-5] (नए जन्म के विषय) कोई संदेह नहीं है"[5] तब वे बिलकुल सही थे।

नए नियम में बपतिस्मा केवल शारीरिक क्रिया नहीं है। यह उस से भी बढ़कर है। जब एक पश्चातापी विश्वासी मसीह में बपतिस्मा लेता है, परमेश्वर स्वयं उस विश्वासी के पाप हटा देता है। जैसा कि हम कभी-कभी सुनते हैं, बपतिस्मा, "भीतरी परिवर्तन का बाहरी चिन्ह" मात्र नहीं है। जबकि बपतिस्मा कोई ऐसा जादुई कार्य नहीं है जिससे परमेश्वर के समक्ष प्रस्तुत होने के लिए हमारी निश्चितता हो, लेकिन यह मसीही नवीनीकरण के लिए कोई बाद में विचार की गई बात भी नहीं है। बपतिस्मा एक विश्वासी का आत्मिक प्रत्युत्तर है। जैसे कि पश्चाताप और परिवर्तित जीवन, वैसे ही बपतिस्मा भी किसी योग्यता के आधार पर नहीं है। परमेश्वर की प्रतिज्ञा है कि एक विश्वासी जिसका हृदय विश्वास और पश्चाताप द्वारा तैयार किया जाता है जब वह बपतिस्मा लेता है उसके पाप धो दिए जाते हैं (प्रेरितों 22:16)। परमेश्वर की उद्धार और जीवन की प्रतिज्ञा विश्वासी के विश्वास द्वारा कार्य करने तथा प्रभु से बपतिस्मा द्वारा मिलने से बन्धी हुई है।

पतरस ने लिखा कि नया जन्म पाना एक **जीवित आशा** के प्रति होता है। प्रेरित ने मसीही "आशा" के साथ विशेषण "जीवित" क्यों जोड़ा यह स्पष्ट नहीं है, परन्तु इससे संबंधित संभावनाओं के बारे में विचार करना कठिन नहीं है। मसीही "आशा" को "जीवित" कहने के पीछे पतरस के मन में (1) मसीह का पुनरुत्थान हो सकता है। क्योंकि क्रूस पर चढ़ाया गया प्रभु जीवित है इसलिए मसीही की "आशा" भी "जीवित" है। (2) दूसरी ओर, "आशा" "जीवित" हो सकती है क्योंकि वह विश्वासी के भीतर बढ़ती हुई, जीवित आशा है। आशा पतरस के पाठकों को स्मरण करवाती है कि मसीही जीवन के बारे में कुछ ऐसा है जिसकी पूर्ति अभी भी शेष है (देखें रोमियों 8:24, 25)। उसके पाठकों के लिए नए जन्म की सभी

आत्मिक आशीषों के होते हुए भी, पतरस उन दुःखों के बारे में जानता था जो वे अभी यीशु के लिए सह रहे थे। मसीही आशा की पूर्ति के लिए, मसीही विश्वासी धैर्य के साथ सह रहे थे।

कुछ ने 1 पतरस को "आशा की पत्री" कहा है। यह सत्य है कि प्रभु का पुनःआगमन, मसीही की आशा का पूर्ण होना पतरस, उसके पाठकों, और सभी मसीहियों के लिए महत्वपूर्ण है। शब्द "आशा" अध्याय 1 में तीन बार और अध्याय 3 में एक बार पाया जाता है, परन्तु पत्री में आशा पृष्ठभूमि का विषय है न कि प्रमुख विषय। इसकी तुलना में, रोमियों 8:24, 25 में शब्द "आशा" पाँच बार पाया जाता है। सारे नए नियम में आशा महत्वपूर्ण विषय है, और अन्य स्थानों के समान 1 पतरस में भी है।

ऐसे संसार में जहाँ शिक्षित और संभ्रांत होना निराशा वादी होने तथा दोष दिखाने के द्वारा पहचाना जाता है, मसीही अपने सिर उठाकर आशा रखते हैं। लैटिन भाषा का एक वाक्यांश है, *dum spiro*, *spero* जो समान लगने वाले शब्दों का प्रयोग करता है। इसका अनुवाद है, "जब तक मैं साँस लेता हूँ, मैं आशा रखता हूँ।" मसीही विश्वासी आदर्श समाज की स्थापना किए जाने पर, या अनुवांशिक यंत्र शास्त्र, या चमत्कारी दवाओं पर भरोसा नहीं रखते हैं। एक सांसारिक व्यक्ति कब्रिस्तान से निकलते हुए भी, निःसन्देह, सीटी बजाता हुआ जाएगा। जिस आशा का आनन्द मसीही लेते हैं वह कुछ भिन्न पर स्थापित है। "मसीही आशा जीवन की बदलती हुई परिस्थितियों पर आधारित नहीं है जिनमें आशा और सपने बहुधा चकनाचूर हो जाते हैं। वरन उसका उद्गम ... उस गहरे विश्वास से है कि परमेश्वर इतिहास का प्रभु है।"[6] मानवजाति की नियति एक भले परमेश्वर के हाथों में है। "आशा के द्वारा तो हमारा उद्धार हुआ है परन्तु जिस वस्तु की आशा की जाती है जब वह देखने में आए, तो फिर आशा कहां रही? क्योंकि जिस वस्तु को कोई देख रहा है उस की आशा क्या करेगा? परन्तु जिस वस्तु को हम नहीं देखते, यदि उस की आशा रखते हैं, तो धीरज से उस की बाट जोहते भी हैं" (रोमियों 8:24, 25)।

पतरस ने अपने पाठकों को आश्वस्त किया कि उनकी आशा प्रेरितों तथा अन्य की उस निश्चित गवाही पर आधारित है कि यीशु मृतकों में से लौट कर आया है। यीशु का पुनरुत्थान प्रारंभिक मसीहियों में होने वाले किसी सामूहिक उन्माद की गवाही नहीं था। वास्तविक रीति से, इतिहास के पन्नों पर, तीसरे दिन परमेश्वर ने यीशु को पुनः जीवित किया। चालीस दिन तक वह फिर से शिष्यों के सामने आया और उन्हें शिक्षा देता रहा (प्रेरितों 1:3)। मसीही आशा **यीशु मसीह के मरे हुओं में से जी उठने के द्वारा** है। नया जन्म और जीवित आशा प्रभु के पुनरुत्थान के कारण निश्चित हैं। इस बात पर ध्यान करना संदर्भ से बाहर नहीं होगा कि 1 पतरस 3:21 में बपतिस्मा और अच्छे विवेक के लिए आग्रह "यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा" पर आधारित है।

आयत 4. पतरस का मन इस्राएल के अनुभवों में इतना स्थापित है कि वह बिना किसी कठिनाई के नए और पुराने को परस्पर एक दूसरे के साथ बुन सका।

यहूदियों की स्वयं के बारे में समझ में एक महत्वपूर्ण बात थी कि इस्राएल के पास परमेश्वर की ओर से मीरास थी (κληρονομία, *क्लेरोनोमिया)*। कनान देश उनकी मीरास थी। मूसा ने इस्राएल को स्मरण करवाया कि, "जो उत्तम देश इस्राएलियों का परमेश्वर यहोवा उन्हें उनका निज भाग कर के देता है" (व्यवस्थाविवरण 4:21)। पुराने नियम में इस्राएल की मीरास कनान से भी बढ़कर; स्वयं परमेश्वर था। भजनकार ने अंगीकार किया, "यहोवा मेरा भाग और मेरे कटोरे का हिस्सा है" (भजन 16:5)। पतरस चाहता था कि नया इस्राएल, प्रभु की कलीसिया, यह जान ले कि उसके पास भी एक **मीरास** थी, परन्तु ऐसी जो इस्राएल के अनुभव से अधिक महिमामय थी। इस्राएल के जीवन काल में उनका देश दूषित हो गया था। पार्थिव वस्तुएं नाशवान और मुरझा जाने वाली होती हैं। इसकी तुलना में, मसीही आशा स्वर्ग में सुरक्षित रखी गई है। यह मीरास अविनाशी और निर्मल है। यह अजर है। प्रेरित ने मसीहियों को प्रभु के प्रकट होने के लिए लालायित तथा आशावान बनाए रखा।

आयत 5. जिन्होंने नई आशा के प्रति नया जन्म पाया है, जिनकी मीरास स्वर्ग में सुरक्षित रखी गई है, उनकी **रक्षा परमेश्वर की** सामर्थ्य से होती है। वही सामर्थ्य जिसने यीशु को मरे हुओं में से जिला उठाया (1:3) वही उनकी जो मसीह में हैं रक्षा करती है। परमेश्वर अपने लोगों की मीरास को स्वर्ग में संभाले रहता, या "सुरक्षित" (1:4; τηρέω, *टेरेओ)* रखता है, साथ ही वह उन लोगों की भी रक्षा करता, या उन्हें "बचाए" (φρουρέω, *फ्रौरेओ)* रहता है। यह बाद वाला शब्द बहुधा सैनिक संदर्भ में प्रयुक्त होता था। परमेश्वर उद्धार का जामिन है। वह अपने लोगों की रक्षा कर सकता है और करने के लिए तैयार है।

यद्यपि परमेश्वर का बल उनके साथ है, मसीहियों के पास आत्म संतुष्ट होने के लिए कोई अवसर नहीं है। रक्षा करने के लिए परमेश्वर का बल उनके सक्रिय विश्वास के द्वारा कार्यान्वित होता है। विश्वास करना कोई निष्क्रिय निर्भरता नहीं है। इसका अर्थ होता है सक्रिय विश्वासयोग्यता। मसीहियों को आज्ञाकारिता के लिए बुलाया गया है (1:2)। अपनी सामर्थ्य के द्वारा परमेश्वर मीरास को थामे रहता है और उनकी रक्षा करता है जो सक्रिय रूप से अपना जीवन उसे समर्पित करते हैं। एफ. जे. ऐ. हॉर्ट ने लिखा कि "विश्वास वह मानवीय दशा है जो ईश्वरीय सामर्थ्य को कार्यान्वित करती है।"[7]

एक प्रकार से पतरस के पाठक परमेश्वर की आशीषों में संभागी हो रहे थे, परन्तु जिन परीक्षाओं से होकर वे निकल चुके थे और निकल रहे थे वे इस बात का प्रमाण थीं कि सब कुछ पूरा नहीं हुआ था। परमेश्वर ने उन्हें उस उद्धार के लिये, जो **आनेवाले समय में प्रगट होनेवाला** है सुरक्षित किया हुआ था। शब्द "तैयार" को अनदेखा नहीं किया जा सकता है। मसीही प्रभु के प्रकट होने और अपनी मीरास को प्राप्त करने के लिए "तैयार" रहते थे। पत्री में आगे पतरस ने लिखा, "सब बातों का अन्त तुरन्त होनेवाला है" (4:7)। प्रेरित और उसके पाठकों के लिए "अन्त समय" वह सुदृढ़ पल था जब प्रभु प्रकट होगा। वे इसकी प्रतीक्षा में जीते थे। पतरस ने "अन्त समय" के लिए यूनानी शब्द को सर्वनाशक अर्थ में

प्रयोग किया। जब मसीह "प्रकट" होगा तब उस समय इतिहास का, जैसा मनुष्यों ने उसे जाना है, अन्त हो जाएगा।

"विभिन्न परीक्षाओं द्वारा कष्ट" (1:6-9)

[6]इस कारण तुम मगन होते हो, यद्यपि अवश्य है कि अभी कुछ दिन के लिये नाना प्रकार की परीक्षाओं के कारण दुःख में हो; [7]और यह इसलिये है कि तुम्हारा परखा हुआ विश्वास, जो आग से ताए हुए नाशवान सोने से भी कहीं अधिक बहुमूल्य है, यीशु मसीह के प्रगट होने पर प्रशंसा और महिमा और आदर का कारण ठहरे। [8]उससे तुम बिन देखे प्रेम रखते हो, और अब तो उस पर बिन देखे भी विश्वास करके ऐसे आनन्दित और मगन होते हो जो वर्णन से बाहर और महिमा से भरा हुआ है; [9]और अपने विश्वास का प्रतिफल अर्थात् आत्माओं का उद्धार प्राप्त करते हो।

पहली चार बार (1:6-9; 3:13-17; 4:12-19; 5:9, 10), पतरस ने अपनी पत्री का एक लंबा भाग अपने पाठकों के उस समय के दुःखों को समर्पित किया। शब्द πᾶσχω (*पास्खो*, "सहना") 1 पतरस में बारह बार आया है, नए नियम के ऐसे किसी भी अन्य लेख की अपेक्षा कहीं अधिक बार। इसके अतिरिक्त दुःख और परीक्षा बताने वाले अन्य शब्द पाँच बार और आए हैं। पतरस ने अपने पाठकों को प्रोत्साहित किया कि वे अपनी परीक्षाओं को परमेश्वर के सार्वभौमिक शासन के संदर्भ में देखें। तात्कालिक संदर्भ में, परीक्षाएं उनके विश्वास को और दृढ़ कर सकती थीं। दीर्घ कालीन दृष्टिकोण से, परमेश्वर उनके विश्वास को प्रमाणित करेगा। जो सहन करेंगे, उनके लिए प्रतिफल जीवन का मुकुट होगा।

आयत 6. पृष्ठभूमि तैयार करने के पश्चात, पतरस अपने पाठकों के दुःख को सीधे संबोधित करने के लिए तैयार था। यद्यपि विषय सताव था, परन्तु चर्चा का विषय विलाप नहीं वरन आनन्द था। उसने आनन्द के कारण को **इस कारण** ἐν ᾧ *(एन होए)* में संक्षिप्त किया। इस वाक्यांश को 1 पतरस में अन्य स्थानों पर भी उपयोग किया गया है, यद्यपि NASB उसका अनुवाद इस प्रकार नहीं करती है (2:12; 3:16, 19; 4:4)। जैसा कि अन्य स्थानों पर जहाँ उसने इस वाक्यांश का प्रयोग किया, सर्वनाम "इस" का तात्पर्य उन सामान्य बातों से है जिनकी चर्चा अभी तक की जा चुकी है, न कि किसी विशेष बात से। पत्री के पाठक अपने नए जन्म पाने, मसीह के पुनरुत्थान के कारण जीवित आशा प्राप्त होने, और अजर मीरास के वारिस होने के कारण **बहुत आनन्दित** हुए थे।

शब्द **यदि आवश्यक** हो (जैसा कि NASB में आया है) भ्रम उत्पन्न करते हैं। यहाँ विषय संभावित परीक्षाएं नहीं है, जो उन पाठकों पर आ या फिर नहीं भी आ सकती हैं। कैली ने इसका अनुवाद "क्योंकि ऐसा होना ही है"[8] किया है। पत्री में यहाँ पर भी और अन्य स्थानों पर भी मसीही **नाना प्रकार की परीक्षाओं के कारण दुःख में** थे। वे अपने विश्वास के लिए एक कीमत चुका रहे थे। सताव की

अनिवार्यता का कारण है कि जब पवित्र लोग पाप द्वारा शासित संसार में जीते हैं, तो संसार उन से द्वेष रखता है। यूहन्ना ने मसीहियों को सताव से होकर निकलने के संबंध में एक महत्वपूर्ण अन्तःदृष्टि 1 यूहन्ना 3:12 में दी। उसने पूछा कि कैन ने अपने भाई हाबिल को क्यों मार डाला। फिर उसने उत्तर दिया कि कैन ने अपने भाई को मारा क्योंकि "उसके [कैन] काम बुरे थे, और उसके भाई के काम धर्म के थे।" मसीहियों के लिए परीक्षाएं अनिवार्य हैं क्योंकि संसार उन से घृणा करता है जो पवित्र होना चाहते हैं। वे इस संदर्भ में कि परमेश्वर ने ठहराया है कि मसीही जीवन के साथ सताव भी होगा, ईश्वरीय आवश्यकता नहीं हैं।[9]

पतरस उन परीक्षाओं के स्वरूप के प्रति जिनका सामना उसके पाठक कर रहे थे विशिष्ट नहीं था। उनकी परीक्षाएं विभिन्न प्रकार की हो सकती थीं। चरम सताव में मसीहियों को यातनाएं अथवा मृत्यु दी जा सकती थी। पत्री में बाद में, प्रेरित को लगा कि वह अपने पाठकों से आग्रह करे कि वे शासकों के आधीन रहें (2:13-17)। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि मसीहियों और शासन अधिकारियों के मध्य संबंध आदर्श नहीं थे।[10] एक अन्य प्रकार का सताव था अपने आस-पास के लोगों का उपहास करना और उन्हें बहिष्कृत करना। जब सामाजिक परंपराएं परिवर्तित हो रही हों तो समाज में हो रही बुराइयों के लिए नए लोगों या नई विचारधारा पर दोषारोपण करना सामान्य होता है।

इसके अतिरिक्त पतरस के पाठकों को आर्थिक सतावों का भी सामना करना पड़ा होगा। जिन्होंने मसीह को स्वीकार किया था उन्हें बाज़ारों में लेन-देन करने में कठिनाइयाँ भी हुई होंगी। उनके जीवनयापन में भी कठिनाई हुई होगी जब वे अपने उत्पाद या बनाए हुए सामान को बेच नहीं सके होंगे। परीक्षाएं जो भी रही हों, पतरस और उसके पाठकों के लिए आनन्दित होने का कारण था। मसीही इस आशा के कारण आनन्दित थे कि मसीह की वापसी पर वे शीघ्र ही अपनी संपूर्ण मीरास को प्राप्त कर लेंगे। परीक्षाएं इस बात का चिन्ह थीं कि समय थोड़ा ही शेष था (4:7); इसलिए वे आनन्द का कारण थीं। चाहे उस पल में वे कठिनाइयों का अनुभव भी कर रहे थे, परन्तु फिर भी प्रधानता आनन्द ही की थी।

आयत 7. दुःख सार्वभौमिक मानवता का एक बड़ा भाग है, परन्तु यह तब संदिग्ध लगता है जब कोई यह अनुमान लगाने का प्रयास करता है कि क्यों परमेश्वर के चुने हुए लोग दुःख उठाते हैं। यह अनपेक्षित था, जब पतरस ने लिखा कि उसके मित्रों की परीक्षाएं इसलिए थीं कि **तुम्हारा परखा हुआ विश्वास** स्पष्ट देखा जा सके (देखें याकूब 1:2, 3)। अय्यूब के "मित्र" एलीपज ने कहा, "देख, क्या ही धन्य है वह मनुष्य, जिसको परमेश्वर ताड़ना देता है; इसलिये तू सर्वशक्तिमान की ताड़ना को तुच्छ मत जान। क्योंकि वही घायल करता, और वही पट्टी भी बाँधता है; वही मारता है, और वही अपने हाथों से चंगा भी करता है" (अय्यूब 5:17, 18)। वह पुरुष इस कथन से असन्तुष्ट था। अय्यूब ने उत्तर दिया, "वह आँधी चलाकर तुझे तोड़ डालता है, और बिना कारण मेरे चोट पर चोट लगाता है" (अय्यूब 9:17)।

क्या यह सच है कि शिशुओं और बुजुर्गों का ताड़ना के साथ परखा जाना,

परमेश्वर की **प्रशंसा और महिमा** के लिए है? क्या परमेश्वर इस उद्देश्य के लिए ताड़ना भेजता है? इस प्रकार का निष्कर्ष पतरस के शब्दों को बहुत दूर तक ले जाता है। ताड़ना देने का कारण एक अलग मामला है; और ताड़ना का परिणाम दूसरा है। परमेश्वर परीक्षा नहीं करता है ताकि उसकी महिमा की जा सके। पतरस ने कहा कि संसार भर में परमेश्वर का सार्वभौम शासन उसकी प्रशंसा को बढ़ा सकता है, भले ही क्यों न उसके लोग दुःख उठाएँ। केली का अनुवाद फिर से सहायक है: "... विश्वास, ... सोने से भी कहीं अधिक बहुमूल्य है, ... प्रशंसा और महिमा और आदर का कारण ठहरे।"[11] पौलुस ने आगे अच्छी रीति से परमेश्वर की महिमा में दुःख के परिणाम निकाले:

> केवल यही नहीं, वरन् हम क्लेशों में भी घमण्ड करें, यही जानकर कि क्लेश से धीरज, और धीरज से खरा निकलना, और खरे निकलने से आशा उत्पन्न होती है; और आशा से लज्जा नहीं होती, क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है (रोमियों 5:3-5)।

परमेश्वर के लोगों के कथन का चित्रण धातु की भट्ठी के समान किसी माध्यम या आग के माध्यम से आता है जो भविष्यद्वक्ताओं में आम है (यशायाह 1:25; 48:10; यिर्मयाह 6:29, 30; यहेज़केल 22:18)। जॉन स्टॉट ने लिखा, "जीवन की निराशाओं और तनाव, अकेलापन, दुःख और दर्द को समझने का एकमात्र उपाय है, उन्हें हमें प्रेम करने वाले पिता के अनुशासन के एक हिस्से के रूप में देखना है जो हमें मसीह की तरह बनाने के लिये निर्णय रखता है।"[12]

मसीही विश्वास एक अचल गुण नहीं है, एक ऐसी वस्तु है जो किसी के पास है या तो नहीं है। जेलर का विश्वास जब उसे ले जाया गया और बपतिस्मा दिया गया (प्रेरितों 16:33) उस समय के लिये पर्याप्त था, परन्तु कोई उससे अपेक्षा कर सकता है कि वर्षों तक मसीही चाल चलन में चलने के पश्चात् उसे अपने विश्वास की गुणवत्ता में बिल्कुल अलग होना चाहिए। दुःख उठाना और प्रभु के साथ जीवित संगति में रहने का अनुभव विश्वास की गुणवत्ता का निर्माण करता है। मसीहियों को तब आनन्द मिलता है जब परीक्षाएँ आती हैं क्योंकि वे अविश्वास की कमी को दूर करते हैं। परीक्षा विश्वास की वास्तविक गुणवत्ता का प्रगटीकरण करती है, और वे गहरा विश्वास भी उत्पन्न करती है। प्रेरित ने मसीहियों को यह उपदेश देते हुए अपनी दूसरी पत्री का समापन किया, "हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और पहचान में बढ़ते जाओ" (2 पतरस 3:18)। जिस प्रकार परीक्षा से विश्वास को खरा किया जाता है, वैसे ही एक मसीही अनुग्रह और पहचान में बढ़ता जाता है।

1:7 में, साथ ही 1:5 में, पतरस ने अपने पाठकों को **यीशु मसीह के प्रकाशन** का स्मरण कराया। प्रभु की वापसी पतरस की सोच से कभी दूर नहीं थी। जब "यीशु मसीह का प्रकाशन" होगा, तो मसीह के विश्वास का "प्रमाण" या "वास्तविकता" दोनों ही अपनी और प्रभु की प्रशंसा, महिमा और आदर को दोहराएंगे। स्तुति, महिमा और आदर परमेश्वर को मिलेगा क्योंकि उसने अपने

लोगों के जीवन में पवित्रता लाई है। उसी समय, वह वास्तविक विश्वास के लोगों में प्रशंसा, महिमा और आदर को बढ़ाएगा। पतरस अपने पाठकों से चाहता था कि वे प्रभु के उदाहरण का पालन करें। इब्रानियों 12:2 कहता है, “और विश्वास के कर्ता और सिद्ध करने वाले यीशु की ओर ताकते रहें, जिसने उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके, क्रूस का दुख सहा, और सिंहासन पर परमेश्वर के दाहिनी ओर जा बैठा.”

आयत 8. प्रेरित ने अपने पाठकों को यीशु में उनके आनन्द और उसके आगमन की उनकी इच्छा के बारे में स्मरण कराया, जबकि उसने यह स्वीकार किया कि उन्होंने **उसे नहीं देखा** था। यह सम्भव नहीं है कि पतरस अपने पाठकों के अनुभवों से अपनी स्वयं के अनुभवों की तुलना चाहता था। उदाहरण के लिए, उन्होंने यीशु को शरीर में नहीं देखा था, परन्तु वह था। अपनी दूसरी पत्री में प्रेरित ने इसके विपरीत किया (2 पतरस 1:16), परन्तु इसमें उसकी व्यक्तिगत आँखों देखी गवाही को अधिक सूक्ष्मता से व्यक्त किया गया था (1 पतरस 2:23, 24; 5:1)।

पतरस ने ध्यान दिया कि उन भाइयों ने यीशु का अनुभव उसकी शारीरिक उपस्थिति के रूप में नहीं किया था, परन्तु वे निश्चित रूप से उससे प्रेम करते थे जैसे कि वह शारीरिक रूप में उनके बीच में उपस्थित हो। क्रियाएँ **प्रेम करना, विश्वास करना**[13] और **बहुत आनन्द लेना** व्याकरणिक रूप से आदेशात्मक हो सकती है, “इस मामले में अनुवाद इस प्रकार होगा, उससे तुम बिन देखे प्रेम रखते हो, और इस समय तो उस पर बिन देखे भी विश्वास करते और आनन्दित होते हो!” परन्तु, संदर्भ में आदेशात्मक बड़े अजीब ढंग से उचित होता है, और सम्भावना है, हो सकता है, कि उसे निरस्त कर दिया जाए। यदि हम क्रियाओं को अनिवार्यताओं के बदले पुष्टि के रूप में लेते हैं, तो यूनानी वर्तमान काल पतरस के शब्दों में रंग भर देता है: “तुमने उसे नहीं देखा है, परन्तु तुम उससे प्रेम करते रहते हो! तुम उसे अब नहीं देखते, परन्तु विश्वास करते और आनन्दित होते रहते हो। तुम्हारा आनन्द वर्णन से बाहर है, जो महिमा से भरा हुआ है और वर्तमान क्षण के लिए दृढ़ रहता है।”

जब भविष्य के प्रकाशन की आशा करते हैं तब विश्वासियों को जब वे दुःख उठाते हैं उन्हें बल देता है, वे वर्तमान में प्रभु के साथ प्रेम के रिश्ते का अनुभव भी करते हैं। मसीह का अनुभव करने के लिए, उससे प्रेम करने के लिए और उसके प्रेम में आनन्दित होने के लिए उसे देखने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि परमेश्वर मानव जाति के प्रेम की इच्छा रखता है जो बाइबल के सबसे उल्लेखनीय प्रकाशनों में से एक है। यह समझना बड़ा आश्चर्यजनक है कि सृष्टि का परमेश्वर अपने लोगों की केवल जानकारी ही नहीं रखता है परन्तु वास्तव में अपनी सृष्टि से प्रेम करता है। समझ से बाहर की बात यह है कि वह अपनी सृष्टि की चिन्ता करता है चाहे उसकी सृष्टि उससे प्रेम करती है या नहीं। इसी लिये, यह पवित्रशास्त्र का सार्वभौमिक साक्ष्य है। शेमा (व्यवस्थाविवरण 6:4) यहूदी और मसीही दोनों के विश्वास का अंगीकार वचन है। मूसा ने केवल एक ही

परमेश्वर होने पर बल देने के बाद कहा, "तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन, और सारे जीव, और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना" (व्यवस्थाविवरण 6:5)। यीशु ने स्वयं कहा था कि सब आज्ञाओं में से यह मुख्य था (मरकुस 12:29, 30)। क्या परमेश्वर को, कुछ अर्थों में मानव जाति के प्रेम की आवश्यकता है? मसीहियों को यह स्वीकार करने में अधिक सरलता होगी कि परमेश्वर मानवीय प्रेम की आवश्यकता से बढ़कर इसकी इच्छा रखता है। तब भी, हमें पूछना चाहिए की वह इच्छा रखता है या नहीं, कम से कम कुछ अर्थों में आवश्य रखता होगा? परन्तु हम प्रश्नों के उत्तर देते हैं, पतरस ने यहाँ तक स्पष्ट किया : एक व्यक्ति को परमेश्वर के साथ महत्वपूर्ण सम्बन्ध बनाए रखने के लिए उससे प्रेम करना चाहिए। पतरस के लिए परमेश्वर से प्रेम करना और यीशु से प्रेम करना एक ही बात थी।

प्रेम और विश्वास का घनिष्ठ सम्बन्ध पूरे नए नियम में पाया जाता है। दो मौखिक अवधारणाएँ, जबकि दोनों एक समान नहीं हैं, और जो एक दूसरे से जुड़े हुए हैं जो कि 1 कुरिन्थियों 13 जैसे अध्यायों में स्पष्ट रूप से मिलते हैं। ओरिस्ट कृदंत (ἰδόντες, *ईडोन्तेस*, "देखा है") से होकर वर्तमान में (ὁρῶντες, *होरोनतेस*, "देख रहे हैं") जो कि देखने की सतत प्रक्रिया पर जोर देता है, पतरस ने फिर से अच्छी रीति से ध्यान देते हुए कहा : "उससे तुम बिन देखे प्रेम रखते हो।" यह सम्भवतः एक अलग ही विश्वास है जिसकी पुष्टि पतरस ने अपने पाठकों के लिये की है। "विश्वास करते हो," जिसके अर्थ का प्रयोग पतरस ने अपने शब्द में किया था, जिसका अर्थ "भरोसा रखते हो" है। पतरस ने कहा, "तुम यीशु मसीह को प्रेम करते हो और उस पर अपना भरोसा भी रखते हो।" प्रेम और विश्वास सुरक्षित रूप से स्थिर हैं।

प्रेम और विश्वास के एक साथ मिलने से यह परिणाम उत्पन्न हुआ : ऐसे आनन्दित और **मगन होते हो जो वर्णन से बाहर और महिमा से भरा हुआ है**। एडवर्ड गॉर्डन सेल्विन ने मसीह के मानवीय शंका के चार चरणों में भेद बताए। पहली बात आशा है, इसके पश्चात् शारीरिक अनुभव है। तीसरा विश्वास है, और चौथा "सुखद दृष्टि, जब विश्वास एक नए प्रकार की दृष्टि में गुजरता है।"[14] अविश्वासी को विश्वासी के आनन्द के अनुभव को समझ पाना कठिन लगता है, और विश्वास करने वाले को अपने आनन्द को व्यक्त करने में कठिनाई होती है कि विश्वास न करने वाला उसकी सराहना कर सके। यद्यपि मसीही का आनन्द "व्यक्त नहीं किया जा सकता," फिर भी वह "महिमा से भरा," उज्ज्वल है, स्वयं को घेरे हुए और जो कुछ भी करता है वह मसीह की उपस्थिति की आभा के साथ करता है।

आयत 9. यूनानी के बाद, NASB 6 से 9 तक आयतों का अनुवाद एक जटिल वाक्य के रूप में करता है। पतरस ने जिन मसीहियों को सम्बोधित किया था, वे [अपने] **विश्वास का प्रतिफल अर्थात्** [उनकी] **आत्माओं का उद्धार प्राप्त** करने की प्रक्रिया में थे। एक सोच थी जिसमें पतरस के पाठकों के लिए उद्धार; भविष्य की एक आशा थी, जिसका अनुभव यीशु मसीह के प्रकाशन में किया

जाना था, परन्तु ऐसी भी एक भावना थी जिसमें उद्धार एक अनुभव की गई वास्तविकता थी। वे इसे प्राप्त कर रहे थे, भले ही वे इसके अन्तिम अनुभव की प्राप्ति की आशा कर चुके थे।

सम्भवतः "उद्धार" नया नियम के समय घनिष्ठ रूप से विश्वास से जुड़ा हुआ है। पौलुस ने लिखा, "क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है" (इफिसियों 2:8)। विश्वास एक सक्रिय अवधारणा है। नया नियम के लेखक अपने आप को कष्ट में नहीं देना चाहते थे कि यह कैसे सम्भव हो सकता है, कि पूरी तरह से एक अपवित्र मनुष्य मसीह में विश्वास करते हुए कुछ ऐसा श्रेष्ठ कार्य कर सकता है। एक बार मनुष्य पूरी रीति से भ्रष्टता के बक्से में सीमित होकर रह जाए, तो विश्वास एक समस्या है। नया नियम में लोगों का मानना है कि विश्वास करने के लिए अच्छे कारण हैं: (1) मरे हुओं में से जी उठने के कारण यीशु को मसीह घोषित किया गया था (रोमियों 1:4)। (2) यीशु के जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान के प्रत्यक्षदर्शी को झूठा ठहराना कठिन था (यूहन्ना 21:24)। (3) पवित्र आत्मा ने विश्वासियों के जीवन में काम किया था (गलातियों 3:2; 4:6)।

विश्वास के परिणामस्वरूप, सभी मनुष्य वे जो बचाए गए हैं, उनकी "आत्माएँ," अनन्त जीवन की महिमा प्राप्त करेंगी जो अपनी सम्पूर्णता में अभी तक प्रकट नहीं हुई थे। आत्मा को किसी शारीरिक अस्तित्व से अलग; मनुष्य का कुछ हिस्से के रूप में नहीं समझा जाना चाहिए। यह सम्पूर्ण मनुष्य है जिसे बचाया जाता है।

भविष्यद्वक्ताओं द्वारा की गई सेवा (1:10-12)

10इसी उद्धार के विषय में उन भविष्यद्वक्ताओं ने बहुत खोजबीन और जाँच-पड़ताल की, जिन्होंने उस अनुग्रह के विषय में जो तुम पर होने को था, भविष्यद्वाणी की थी। 11उन्होंने इस बात की खोज की कि मसीह का आत्मा जो उन में था, और पहले ही से मसीह के दुःखों की और उसके बाद होनेवाली महिमा की गवाही देता था, वह कौन से और कैसे समय की ओर संकेत करता था। 12उन पर यह प्रगट किया गया कि वे अपनी नहीं वरन् तुम्हारी सेवा के लिये ये बातें कहा करते थे, जिनका समाचार अब तुम्हें उनके द्वारा मिला जिन्होंने पवित्र आत्मा के द्वारा, जो स्वर्ग से भेजा गया, तुम्हें सुसमाचार सुनाया; और इन बातों को स्वर्गदूत भी ध्यान से देखने की लालसा रखते हैं।

पतरस अपने पाठकों से चाहता था कि वे जान ले की जो दुःख वे उठा रहे थे और जिस उद्धार का आनन्द वे मनाते थे वह परमेश्वर के विचार के पीछे नहीं हुआ था। चाहे वे इसके बारे में जानते थे या नहीं, परमेश्वर ऐतिहासिक घटनाओं के दौरान अपनी इच्छा पर कार्य कर रहा था।

आयतें 10-12. सुसमाचार के संदेश में एक महत्वपूर्ण तत्व यह है कि यीशु

परमेश्वर के उद्देश्यों और उसकी प्रतिज्ञाओं की पूर्णता है। यीशु और अन्य लोगों ने अकसर भविष्यद्वक्ताओं से विनती की। भविष्यद्वक्ताओं ने पुराने नियम में मसीह के आगमन के बारे में जो बातें कही थीं वह यीशु के व्यक्तित्व और उसकी बनाई कलीसिया में पूरा हुआ। हम जिस बात की अनदेखी करते हैं वह यह है कि भविष्यद्वक्ताओं को पुराने नियम के लिये नहीं भेजा गया है। समकालीन भविष्यद्वक्ताओं ने पहली सदी की कलीसिया के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जब पौलुस ने लिखा कि कलीसिया "प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर बनाई गई है" (इफिसियों 2:20), या मसीह का रहस्य "अपने पवित्र प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं पर प्रगट किया गया है" (इफिसियों 3:5) या "उसने कुछ को प्रेरित और कुछ को भविष्यद्वक्ता के रूप में नियुक्त करके दे दिया" (इफिसियों 4:11), यह स्पष्ट है कि उसके मन में नए नियम के भविष्यद्वक्ताओं का ध्यान था। आत्मा के वरदानों की चर्चा करते हुए, पौलुस ने लिखा, "परमेश्वर ने कलीसिया में अलग - अलग व्यक्ति नियुक्त किए हैं; प्रथम प्रेरित, दूसरे भविष्यद्वक्ता, ..." (1 कुरिन्थियों 12:28)। हम उन विशिष्ट लोगों से मेल करते हैं जिन्हें भविष्यद्वक्ता कहा जाता है, जिसमें अगाबुस, यहूदा और सीलास सम्मिलित हैं (प्रेरितों के काम 11:27, 28; 15:32)। जब यूहन्ना ने मसीहियों को झूठे भविष्यद्वक्ताओं (1 यूहन्ना 4:1) के विषय चेतावनी दी थी, जिसका तात्पर्य कलीसिया को सच्चे भविष्यद्वक्ताओं से अवगत कराया जाना था।

हमें इतनी जल्दी नहीं मान लेना चाहिए कि जिन **भविष्यद्वक्ताओं** को पतरस ने स्मरण किया था वे पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता थे। सेल्विन ने समझाते हुए यह तर्क दिया कि विचाराधीन भविष्यद्वक्ता मसीही भविष्यद्वक्ता थे।[15] सम्भव हो सकता है कि भविष्यद्वक्ता **जिन्होंने अनुग्रह के विषय में भविष्यवाणी की थी** (1:10) उनमें से थे **जिन्होंने तुम्हें सुसमाचार सुनाया** (1:12)। आयत 10 की व्याख्या का एक महान पाठकों का तर्क वितर्क जो भविष्यद्वक्ताओं के होने को समझने वाले हैं पर निर्भर करता है, सेल्विन के तर्कों का यह पूर्वाभ्यास समय के महत्व को बढ़ाएगा।

सबसे पहले, हम देखते हैं कि NASB ने अपने अनुवाद में **होने को** अनुवाद किया है, जबकि इसके शब्द को इतालिक (*italics*) में रखा है, यह अनावश्यक रूप से व्याख्या करता है। वे यूनानी भाषा में नहीं हैं। शाब्दिक अनुवाद जैसा कि सम्भव है, 1 पतरस 1:10 लिखता है, "इसी उद्धार के विषय में उन भविष्यद्वक्ताओं ने बहुत खोजबीन और जाँच-पड़ताल की, जिन्होंने उस अनुग्रह के विषय में जो तुम पर होने को था, भविष्यद्वाणी की थी।" नया नियम में प्रायः पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं का उल्लेख किया गया है जिन्होंने यीशु और उसकी कलीसिया के विषय में बातें की थी, परन्तु यह अनपेक्षित है कि पतरस को यह कहना चाहिए कि पुराने नियम के **भविष्यद्वक्ताओं ने बहुत खोजबीन और जाँच पड़ताल की**।

भविष्यद्वक्ताओं ने क्या छानबीन और पूछताछ की थी? क्या पतरस का अर्थ था कि उन्होंने लिखित स्रोतों से एक संदेश माँगा था? सम्भव हो सकता है कि

शब्द यह माँग नहीं करते हैं कि लिखित स्रोत भविष्यद्वक्ताओं की छानबीन का उद्देश्य हो, परन्तु उन्हें इस प्रकार लेना स्वाभाविक है। यह एक प्रश्न उत्पन्न करता है क्योंकि लिखित या मौखिक स्रोतों की खोज में जो पुराना नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने किया उसका पता नहीं चलता है। पौलुस के समान (गलातियों 1:1), जिन्होंने बल देकर कहा कि उन्होंने अपना संदेश सीधे प्रभु से प्राप्त किया है (देखें आमोस 7:14, 15)। यदि पुराना नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने प्राचीन लिखित स्रोतों से अपना संदेश प्राप्त नहीं किया है, तो कोई भी सरलता से कल्पना कर सकते हैं कि नए नियम के समय के भविष्यद्वक्ताओं ने, इसके साक्ष्य के लिए पुराने नियम की पुस्तकों में यीशु मसीह, कलीसिया और परिस्थितियों के जिसके अधीन जीवित कलीसिया हो, के बारे में छानबीन करते हैं। उदाहरण के लिए, पौलुस ने थिस्सलुनीके के आराधनालय में पवित्रशास्त्र से तर्क दिया, "उन का अर्थ खोल खोलकर समझाता था, कि मसीह को दुख उठाना अवश्य था" (प्रेरितों 17:2, 3)।

इसके अतिरिक्त, पतरस ने लिखा कि यह **मसीह का आत्मा जो उनमें था** भविष्यद्वक्ताओं के काम का निर्देशन करता था। यदि पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता को ध्यान में रखा गया है, तो कोई पतरस से यह लिखने की अपेक्षा कर सकता है कि परमेश्वर का आत्मा उन में था या यहाँ तक कि पवित्र आत्मा उन में था। यह अनपेक्षित है कि प्रेरित को कहना चाहिए कि मसीह का आत्मा पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं में काम कर रहा था। यह बिल्कुल असम्भव नहीं है, परन्तु यह पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं के काम के लिए मसीह की आत्मा को जिम्मेदार ठहराए जाने के लिए नए नियम में अभूतपूर्व है। दूसरी ओर, कोई अपेक्षा करता है कि पतरस ने नये नियम के समय में भविष्यद्वक्ताओं के काम को "मसीह का आत्मा उनमें है" के रूप में करने का श्रेय दिया है।

पहला पतरस 1:11 में ऐसा वाक्यांश है जिसकी यूनानी में व्याख्या करना कठिन है, और इसलिये अनुवाद करना भी कठिन है। इस समस्या पर पृष्ठ 48 और 49 पर अधिक विस्तार से चर्चा की गई है, परन्तु अब ध्यान देते हैं कि जहाँ NASB ने यह जानने की खोज की कि वह कौन से और कैसे समय में था, वहीं NIV ने "समय और परिस्थितियों को जानने का प्रयास किया है।" यह वाक्यांश जरूरी नहीं है कि भविष्यद्वक्ताओं ने एक मनुष्य के विषय में पूछताछ की थी, अर्थात् यीशु मसीह के विषय में, हो सकता है कि वे "समय और परिस्थितियों" की खोज कर रहे थे, जिनके परिणामस्वरूप शुरुआती विश्वासियों का मसीह में अनुभव हुआ था।

पतरस ने कहा कि भविष्यद्वक्ताओं में आत्मा मसीह **और पहले ही से मसीह के दुःखों की गवाही देता था**, जो इस मामले को सुलझाने लगता है। यदि भविष्यद्वक्ताओं ने मसीह के दुःखों की भविष्यवाणी की थी, तो वे पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता थे। इसलिये, यूनानी वाक्यांश τὰ εἰς Χριστὸν παθήματα *(टा एईस क्रिसटोन पाथेमाटा)* है। यदि इसका तात्पर्य मसीह के दुःखों के लिए लिया गया है, तो यूनानी पाठक τὰ τοῦ Χριστοῦ παθῆματα *(टा टू क्रिस्टू*

पाथेमाटा) या इसी के समान वाक्यांश की अपेक्षा कर सकता था। ये ही शब्द हैं जिसे पतरस ने वास्तव में, 4:13 और 5:1 में प्रयोग किया था। शब्द *एईस क्रिस्टोन* का प्रयोग इंगित करने के लिए किया गया कि "मसीह के" दुःखों को जो मुद्दे के विषय थे, जो अत्यधिक असामान्य हो सकता है। अपेक्षित अनुवाद "मसीह के लिए" है, जैसा कि प्रेरितों 2:38 में जहाँ पर εἰς ἄφεσιν τῶν ἁμαρτιῶν *(एईस अफेसिन तोन हमारटीओन)* "पापों की क्षमा के लिए" के बराबर होता है। क्योंकि जब हम स्मरण करते हैं कि 1 पतरस का एक महत्वपूर्ण हिस्सा मसीहियों के दुःख का है, तो अनुवाद "मसीह के लिये[पाठकों का] दुःख उठाना" अच्छी रीति से पत्री के व्यापक संदर्भ में उचित बैठता है। सम्भावना है कि नए नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने पुराने नियम और यीशु के शब्द दोनों की खोज की कि "मसीह के लिए" विश्वासियों के दुःखों के समय और परिस्थितियों के बारे में भविष्यवाणियाँ न केवल उपयुक्त है, पर ऐसा ही है।

पतरस ने कहा कि भविष्यद्वक्ता मसीह के लिये दुःखों की और उसके **बाद होनेवाली महिमा** दोनों की गवाही देते थे। NASB और NIV इसका शाब्दिक अनुवाद करते हैं। यूनानी संज्ञा का अनुवाद "महिमा" बहुवचन के रूप में है। यदि संदर्भ महिमा के लिये है जिसे परमेश्वर ने यीशु के उसके जी उठने या उसके स्वर्गारोहण में दिया था, यह अचरज की बात होगी कि पतरस को बहुवचन का उपयोग करना चाहिए। दूसरी ओर, यदि प्रेरित ने विश्वासियों द्वारा "महिमा से भरा" (1 पतरस 1:8) आनन्द को व्यक्त न करने के भाव का उल्लेख किया है, जब प्रभु आएगा मसीही इसके वारिस होंगे, बहुवचन वही है हम जिसकी अपेक्षा करते हैं। इसकी अधिक सम्भावना है कि नए नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने सताए गए विश्वासियों की प्रतीक्षा में "महिमा" की गवाही थी, जो पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने मसीह के लिए महिमा की गवाही दी थी। 1:10-12 के विषयों के बारे में नए नियम के भविष्यद्वक्ताओं के रूप में सोचना सर्वोत्तम है। इस प्रकार की व्याख्या अपनाई जाती है जो उसके आधार के साथ आगे बढ़ते जाएँगे।

1:10 में **उद्धार** शब्द पिछली आयत से चली आ रही है। मसीही विश्वास का प्रतिफल आत्माओं का उद्धार है। हम नए नियम के भविष्यद्वक्ताओं के कामों के बारे में बहुत कम जानते हैं। यदि अगाबुस से कोई संकेत मिलता है (प्रेरितों 11:27, 28; 21:10, 11), तो यह प्रतीत होता है कि पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं की तुलना में भविष्य की बात बताना नए नियम के भविष्यद्वक्ताओं के कार्यों का अधिक महत्वपूर्ण तत्व था।[16] यह ध्यान देने योग्य बात है कि जब अगाबुस दृश्य पर प्रगट हुआ, तो वह कलीसिया के इतिहास का आरम्भ का समय था और सम्भवतः पेन्तेकुस्त के लगभग पंद्रह साल के भीतर की बात थी। जिस औपचारिक रीति से अगाबुस का परिचय दिया गया था, उससे पता चलता है कि कलीसियाई जीवन में भविष्यद्वक्ताओं ग्रहण किया जा चुका था। पतरस से पता चलता है कि नए नियम के भविष्यद्वक्ता न केवल भविष्य की बात बताते थे, बल्कि सावधानीपूर्वक पुराने नियम और यीशु के शब्दों की जानकारी प्राप्त करने के लिए खोज भी करते थे, जिससे कलीसिया को परमेश्वर

का प्रकाशन का प्रगट रूप मानी जाए। यह अकल्पनीय है कि कलीसिया में भविष्यद्वक्ताओं की उपस्थिति ने विश्वासियों के लिए प्रोत्साहन प्रदान किया जो यीशु के शब्दों और कार्यों को लिखना चाहते थे। भविष्यद्वक्ताओं में हमें यह स्पष्ट किया जा सकता है कि कलीसिया ने सुसमाचार की पत्रियों का निर्माण कैसे किया और क्यों किया?

लिखित और मौखिक स्रोतों में अपने शोध के आधार पर, नया नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने "अनुग्रह जो तुम पर होने को था" (1:10) की बात की थी। ऐसा प्रतीत होता है कि पतरस ने "अनुग्रह" शब्द का प्रयोग शास्त्रीय अभिप्राय से किया, जिसका अर्थ "कृपालुता" या "आकर्षण" है। केली ने लिखा है कि "यह परमेश्वर का सम्पूर्ण अनुग्रहकारी कार्य है, जिससे उद्धार पूर्ण होता है।"[17] अनुग्रह जिसके विषय में भविष्यद्वक्ताओं ने भविष्यवाणी की थी वह "तुम्हारे लिये" (εἰς ὑμᾶς, *एईस हुमास)* है, जो कि पतरस के पाठकों के लिये है। ये मसीही अधिकांश गैरयहूदी पृष्ठभूमि के लोग थे, यहूदी नहीं (देखें टिप्पणी 1:14, 18 पर)।[18] प्रेरितों और गलातियों ने यह स्पष्ट किया कि प्रारंभिक कलीसिया ने गैरयहूदी प्रश्नों (उदाहरण के लिये, प्रेरितों के काम 11:2, 3; 15:5; 21:20; गलातियों 5:4) पर बहुत अधिक संघर्ष किया। क्या अन्यजातियों को मसीही बनने के मार्ग पर मूसा के नियम का पालन करना चाहिए? सम्भवतः नया नियम के यहूदी पृष्ठभूमि के भविष्यद्वक्ता पौलुस का और अन्य लोगों का जिन्होंने इस मत का इनकार कर दिया समर्थन करने में महत्वपूर्ण थे। पतरस यह कहते हुए प्रतीत हुआ कि, शुरुआती समय से, कलीसिया में भविष्यद्वक्ताओं ने भविष्यवाणी की थी कि अन्यजाति के लोग परमेश्वर के अनुग्रह के भागी होंगे।

भविष्यद्वक्ताओं ने इस बात की खोज की "कि मसीह का आत्मा जो उन में था, वह कौन से और कैसे समय की ओर संकेत करता था।" जैसा कि पृष्ठ 46 में बताया गया है, जिस रीति से वे 11वीं आयत को प्रस्तुत करते हैं उससे अनुवाद में अन्तर होता है। NIV में "समय और परिस्थितियों को जानने का प्रयास किया," KJV में भी इसी के समान है। कठिन वाक्यांश εἰς τίνα ἢ ποῖον καιρὸν *(एईस टीना ए पोइओन काइरोन)* है। प्रश्नवाचक सर्वनाम *टीना* स्वतंत्र रूप से स्थिर हो सकता है, जिसका अर्थ है "कौन सा व्यक्ति" या यह *पोईओन काईरोन* के साथ लगाया जा सकता है, जिसका अर्थ है "क्या या किस प्रकार का समय।" बाद में समझा गया, यह सुझाव दिया गया है कि नया नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने पूछा था कि मसीहियों का मसीह के लिए दुःख उठाना कौन से समय में होगा और किस प्रकार की परिस्थितियों में ऐसा होगा। पुरानी रीति से समझा गया, पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने पूछा था कि वे कौन थे जिनके लिये परमेश्वर की प्रतिज्ञा थी? व्याकरण की रीति से वाक्यांश को किसी भी तरह से समझा जा सकता है। किसी भी अनुवाद के मामले में संदर्भ के अनुसार तर्क दिया जा सकता है। संदर्भ तर्क देता है कि नया नियम के भविष्यद्वक्ता पतरस का विषय है। यह मामला होने के कारण, NIV या KJV का अनुवाद उपयोगी माना जाना चाहिए। हमने पहले ही "भविष्यद्वक्ता मसीह के दुःखों की और उसके

बाद होनेवाली महिमा दोनों की गवाही देते थे" वाक्यांश पर चर्चा की है (देखें पृष्ठ 46 और 47)। हम विश्वास करते हैं कि अनुवाद "मसीह के लिये दुःखों" "मसीह के दुःखों" से अधिक अच्छा व्याकरण और संदर्भ प्रदान करता है। एक बार जब हम अनुवाद "मसीह के लिये दुःखों" को ग्रहण कर लेते हैं, तो उस "महिमा" का अर्थ वह है कि पतरस के चित्त में था कि मसीही युग के अंत में आशा करते हैं।

1:10-12 की व्याख्या को पाठक जिस रीति से शब्दों को समझते हैं, τὰ εἰς Χριστὸν παθήματα *(टा एईस क्रिस्टोन पाथेमाटा)* चाहे वे "मसीह के दुःखों" या "मसीह के लिये दुःखों" को बताते हैं। प्रश्न जटिल हैं, परन्तु कई कारणों से "मसीह के लिये दुःखों" को प्राथमिकता दी जानी है। कारणों का एक सारांश इस प्रकार है: (1) भविष्यद्वक्ताओं के कार्य के बारे में हम जो कुछ जानते हैं, उससे अधिक सम्भावना है कि नया नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने मसीहियों का मसीह के लिये दुःख उठाने को उन्हें समझने में सहायता करने के लिये शास्त्रों में खोज और पूछताछ की होगी, पुराना नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने मसीह के अपनी दुःख को समझने में सहायता करने के लिये शास्त्रों में खोज की होगी। (2) नया नियम के भविष्यद्वक्ताओं में मसीह का आत्मा काम कर रहा था जो पूरी रीति से समझने योग्य है। यह अनपेक्षित है कि पतरस को कहना चाहिए कि "मसीह का आत्मा" पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं में काम कर रहा था। (3) अनुवाद "मसीह के लिये दुःखों" यूनानी सम्बन्ध सूचक εἰς (*एईस)*, अनुवाद "मसीह के दुःखों" से बेहतर समझ देता है। (4) बहुवचन "महिमा" स्वाभाविक है, यदि पतरस ने उन महिमाओं को ध्यान में रखा था जिसका अनुभव मसीही प्रभु के आगमन पर करने पाएँगे। बहुवचन पर बल दिया जाता, यदि यह संदर्भित किया जाता कि क्रूसीकरण के बाद यीशु का क्या हुआ। इन्हीं कारणों से भविष्यद्वक्ताओं को समझना उत्तम है कि पतरस ने नये नियम के भविष्यद्वक्ताओं के जैसे बताया।[19]

परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ताओं पर **प्रगट** किया कि उनकी पूछताछ में समय-समय पर और मसीही दुःख की प्रक्रिया में **वे अपनी नहीं वरन् तुम्हारी सेवा के लिये ये बातें कहा करते थे** (1:12)। उनकी सेवकाई का उद्देश्य संतों की सेवा करना था। पौलुस स्वयं को एक प्रेरित और भविष्यद्वक्ता दोनों ही मानता था (1 कुरिन्थियों 14:5, 6)। उसने दोनों क्षमताओं में अपनी भूमिका को समझ लिया कि वे एक सेवक के रूप में पहचाना जाए उनके लिये जो मसीह को उसके प्रचार के द्वारा जानते थे। "क्योंकि सब से स्वतंत्र होने पर भी मैं ने अपने आप को सब का दास बना दिया है; कि अधिक लोगों को खींच लाऊँ" (1 कुरिन्थियों 9:19)। मसीहियों को हर प्रकार के प्रोत्साहन की जरूरत होती थी यदि वे विश्वासयोग्य बने रहते थे तो वे उन्हें प्राप्त कर सकते थे। यीशु ने चेतावनी दी थी और उन लोगों को धन्य कहा था जो उसके कारण सताए जाते हैं (मत्ती 5:10-12)। पौलुस ने नए विश्वासियों को जिनके लिये उसकी प्रतीक्षा थी "कि हमें बड़े क्लेश उठाकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना होगा" (प्रेरितों 14:22) के साथ तैयार किया। जब भविष्यद्वक्ताओं ने कलीसिया के विकास की प्रकृति और विरोधियों के स्वभाव की जो गैर-विश्वासियों से प्राप्त किया जाएगा, पहले से

पूछताछ की, वे व्यर्थ जिज्ञासा को सन्तुष्ट नहीं कर रहे थे, अर्थात् वे स्वयं की सेवा नहीं कर रहे थे। उन्होंने बढ़ते हुए विश्वास के साथ मसीहियों की सेवा करना सीखा। उन्होंने विश्वासियों को अपने दुःखों के बीच रिश्ते को और उद्धार जिसे परमेश्वर ने अनुग्रह से दिया था समझने में सहायता की।

पतरस के पाठकों की सहायता करने के लिये भविष्यद्वक्ताओं के पास अन्य तरीके भी थे। उन्होंने न केवल घटनाओं के बारे में पूछे जाने वाले भविष्य की जाँच की, उन्होंने पतरस के पाठकों की सहायता यह कह कर की, **ये बातें कहा करते थे, जिनका समाचार अब तुम्हें उनके द्वारा मिला**। यह वे भविष्यद्वक्ता थे, जिन्होंने **पवित्र आत्मा के द्वारा, जो स्वर्ग से भेजा गया**, उन्हें सुसमाचार सुनाया था। पुराने नियम के जैसे नए नियम में भविष्यवक्ताओं ने अपने सम कालीनों के लिए एक संदेश दिया था। यह मानना आवश्यक नहीं है कि जो लोग पतरस के पाठकों को सुसमाचार का प्रचार करते थे, वे भविष्यद्वक्ता ही थे, न ही हमें यह मानना चाहिए कि भविष्यद्वक्ताओं ने कुछ भी नहीं बल्कि सुसमाचार का प्रचार किया है। सुसमाचार का प्रचार जो भविष्यद्वक्ताओं ने किया वह उनके कार्यों में से एक था। यह महत्वपूर्ण है कि पतरस ने “पवित्र आत्मा” के द्वारा भविष्यद्वक्ताओं के काम की निगरानी का उल्लेख किया। काम में जो उन्होंने किया था, भविष्यद्वक्ताओं ने पवित्र आत्मा की अपेक्षा की और उससे सामर्थ्य और निर्देश प्राप्त किया। आत्मा ने वरदानों में से जो मसीहियों को दिया था वह भविष्यवाणी था (1 कुरिन्थियों 12:10)। जिन्होंने ने उस वरदान को प्राप्त किया था, वह संदेश सुनाया था जो पतरस के पाठकों ने सुना था।

बाद में विचार लगने वाली बात में, पतरस ने जोड़ा कि, इन बातों को स्वर्गदूत भी ध्यान से देखने की लालसा रखते हैं। स्वर्गदूतों के बारे में हम उतना ही बता सकते हैं जितना बाइबल बताती है कुछ कह सकते हैं जो बाइबल में पाए जाते हैं। हम उन्हें उन कार्यों को करते हुए पाते हैं जो परमेश्वर ने उन्हें करने के लिये भेजा है। वे परमेश्वर के संदेशवाहक हैं। इसके अतिरिक्त, अपर्याप्त जानकारी के आधार पर जो हमारे पास है स्वर्गदूतों का धर्म शिक्षा बना लेना जोखिम की बात है। जब पतरस ने कहा कि स्वर्गदूत मसीहियों पर प्रगट किए गए मामलों पर ध्यान देने की इच्छा रखते थे, तो उन्होंने सुसमाचार संदेश के सांसारिक अनुपात को रेखांकित किया। वचन उस संदेश के महत्व के बारे में पाठकों को बताते हैं जिसने उन्हें बचाया था। पतरस हमें स्वर्गदूतों, परमेश्वर की अर्थव्यवस्था की जगह में प्रवेश करने के लिये आमंत्रित नहीं कर रहा था; बहुत कम वह हमें अपने मूल पर अनुमान लगाने के लिये आमंत्रित कर रहा था। आशीषों को जो भविष्यद्वक्ताओं ने मसीहियों के लिये लाई थीं, जब उन्होंने उन्हें सुसमाचार सुनाया, जिसका महत्व अधिक ऊँचा था कि कई वर्ष बीत जाने पर भी परमेश्वर के स्वर्गदूत उनके पूरा होने के बारे में जानने की इच्छा रखते थे। निदान यह है कि स्वर्गदूतों के लिये जिन बातों को अस्वीकार किया गया था अब विश्वासियों के लिए प्रतीत किया गया था।

पवित्र लोग (1:13-16)

[13]इस कारण अपनी अपनी बुद्धि की कमर बाँधकर, और सचेत रहकर, उस अनुग्रह की पूरी आशा रखो जो यीशु मसीह के प्रगट होने के समय तुम्हें मिलनेवाला है। [14]आज्ञाकारी बालकों के समान अपनी अज्ञानता के समय की पुरानी अभिलाषाओं के सदृश न बनो। [15]पर जैसा तुम्हारा बुलानेवाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने सारे चालचलन में पवित्र बनो। [16]क्योंकि लिखा है, पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ।

पूरे नए नियम में, प्रभु की वापसी और इस संसार के लिये परमेश्वर का न्याय स्वच्छ नैतिक व्यवहार के लिये एक अपील के रूप में कार्य करता है। 1 पतरस में इसकी सत्यता और कहीं से कम नहीं है। परीक्षाओं के समय में, मसीहियों को "[अपने] उस अनुग्रह की पूरी आशा ... जो यीशु मसीह के प्रगट होने के समय तुम्हें मिलनेवाला पर ध्यान लगाना आवश्यक है।"

आयत 13. प्रेरित ने अपने पाठकों को उनकी बुलाहट और उनके अविनाशी मीरास की आशा का स्मरण कराया था। इसके अतिरिक्त, उसने उन परीक्षाओं का कारण पहचाना और समझाया जिनका सामना वे उन दिनों करते थे। सभी लोगों में से, मसीही सबसे अधिक धन्य हैं, सबसे अधिक प्रशंसा के पात्र हैं। यह सब परमेश्वर के अनुग्रह से प्राप्त हुआ था, जैसा कि सुसमाचार में उनपर प्रगट किया गया था, जो उन्होंने सुना था। इसके बाद की सभी बातें **इस कारण** से है। अनुग्रह के अपेक्षित परिणाम के रूप में जो उन्होंने प्राप्त किया था, प्रेरित ने अपने पाठकों को [उनकी] **बुद्धि की कमर बाँधकर** रहने की अपील की। इस अपील ने उसके पाठकों को इस्राएल के इतिहास में उनकी जड़ों के बारे में स्मरण कराना जारी रखा, यद्यपि स्मरण करानेवाला नम्र था। NASB ने इस विचार का अनुवाद आधुनिक मुहावरेदार अंग्रेजी में किया है। KJV ने प्राचीन मुहावरों को सही ढंग से संरक्षित किया है, जब यह लिखता है, "अपने बुद्धि की कमर कसकर।" चित्र उन लोगों के हैं जो ढीले, लहराते हुए कपड़े पहनते हैं जो उन्हें तेज हवा और शुष्क की गर्मी, शुष्क जलवायु से बचाने के लिये तैयार किए जाते थे। ये कपड़े आरामदेह, दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों के लिये उत्कृष्ट थे, परन्तु जब उन्हें जल्दी से स्थानान्तरित करने की जरूरत होती थी, तब वे बोझिल होते थे। गंभीर काम या तेजी से यात्रा के लिए, जो लोग ढीले वस्त्र पहनते थे उन लोगों को "उन्हें कसकर बाँधना" होता था, अर्थात् अपने अंगों के चारों ओर लपेटना या बाँधना पड़ता था। जो लोग प्राचीन निकट पूर्व में रहते थे, जिन्होंने विश्व के उस भाग की शुष्क गर्मी का अनुभव किया था, वे जानते थे कि क्या पहनना पसंद था और ढीले वस्त्रों के साथ काम करने का प्रयत्न करना था (निर्गमन 12:11; 1 राजा 18:46; 2 राजा 4:29; 9:1; अय्यूब 38:3; लूका 17:8)।

पतरस ने अपने पाठकों को कार्य करते रहने के लिये सांकेतिक भाषा का

प्रयोग किया। एक मसीही होना, अनन्त विरासत की आशा में लगे रहने से अधिक था; यह परमेश्वर का उन्हें दिए अनुग्रह के वरदान का कार्य रूप में व्यक्त करने से अधिक था। जिस आशा को उन्होंने साझा किया था वह एक प्रेरणा थी, जो उन्हें महान, ईश्वरीय, पवित्र जीवन जीने के लिये प्रेरित करती थी जिसके लिए वे बुलाए गए थे। जिस माप तक वे उस जीवन को जी रहे थे जिसके लिये परमेश्वर ने उनसे आग्रह किया था, उस स्तर तक वे अब भी उस मीरास के आशीष में भागी होंगे, जिसकी पूर्णता का अनुभव जल्द ही किया जाएगा।

NASB का अनुवाद समय, संस्कृतियों और भाषाओं में सांकेतिक भाषा को लेकर कठिनाई को दिखाता है। अनुवादकों को यह तय करना होगा कि मूल दस्तावेज़ के स्वाद को बनाए रखने के लिए वे कितनी दूर जाने के लिए तैयार हैं। जो लोग अनुच्छेद का शाब्दिक रूप से अनुवाद करते हैं, "अपनी बुद्धि की कमर कसकर," आज प्राचीन संसार के रीति-रिवाजों के साथ स्वयं परिचित पाठक की आवश्यकता है। अन्यथा, सांकेतिक भाषा का कोई अर्थ नहीं होगा। अनुवादक जो "अपनी अपनी बुद्धि की कमर बाँधकर" या का इसी के समान इस मुहावरे की व्याख्या करने की इच्छा रखते हैं कि उस रीति से एक आधुनिक पाठक स्वयं को अभिव्यक्त कर पाए। इस मामले में पाठक को वस्त्रों के प्राचीन रीति रिवाजों को समझने के लिये थोड़ा सा प्रयास करने की आवश्यकता है। अनुवाद के दोनों दर्शनशास्त्रों के लिये एक प्रकरण तैयार किया जा सकता है।

मन की स्पष्टता, एक ही समर्पण हेतु मसीही बुलाहट की स्थिति का आनन्द लेने के लिये है, इसलिए विश्वासियों को **सचेत रहना चाहिए**। Nῆφω *(नेफो)* जिसका शाब्दिक अर्थ हिंदी, अंग्रेजी और यूनानी में "सचेत रहना" है, उसका अभिप्राय "मद्यपान से मुक्त होना" है। जबकि, इन भाषाओं में इसका सांकेतिक अर्थ भी है "संतुलित और गम्भीर" होना, "स्व-नियन्त्रण का अभ्यास" करना भी है। पतरस ने अपने पाठकों को स्मरण कराने के लिये इस शब्द का प्रयोग किया क्योंकि, अन्ततः मानव जीवन एक गम्भीर मामला है। जीवन रोगी नहीं है, परन्तु यह गम्भीर है। एक अविश्वासी के लिये जो अपने अविश्वास को गम्भीरता से लेता है, जीवन गम्भीर नहीं है। यह दुःखद या विचित्र है लेकिन गम्भीर नहीं हो सकता है। यदि जीवन का कोई अन्तिम अर्थ नहीं है, तो जीवन को गम्भीरता से लेने का कोई कारण नहीं है, सचेत रहने का कोई कारण नहीं है।[20] ग्रीको-रोमन संसार में जहाँ पतरस और उनके पाठक रहते थे, जीवन के लिये एक सनकी, व्यर्थवादी दृष्टिकोण कोई अजनबी नहीं था, जो लतीनी वाक्यांश *कार्पे डिएम* में अच्छी तरह से व्यक्त किया गया है, "दिन को वश में करें।" दिन का आनन्द ले, यद्यपि यह असहाय मनुष्य के अधिक खर्च पर टिका हो फिर भी। दिन को पकड़ने के लिए कुछ भी नहीं है दिन से आगे कब्र का अनन्त कालापन है। इस प्रकार के विचार के संसार में, संयम के लिए अपील या तो आवश्यकता से अधिक है या विचित्र है।

विश्वास और संयम ने पतरस को भाइयों को चेतावनी देने के लिये आगे लाया कि [वे] **उस अनुग्रह की पूरी आशा रखें जो यीशु मसीह के प्रगट होने के**

समय [उन्हें] **मिलनेवाला है।** यह अनिवार्यताओं की एक श्रृंखला में पहला है।[21] वह "पवित्र बनो" (1:15), "डर में अपने आप को पालन" (1:17), और "एक दूसरे से प्रेम करो" (1:22) जोड़ेगा। नए नियम में और कहीं और, "आशा" आत्मविश्वास की अपेक्षा के बराबर है, अस्पष्ट इच्छा नहीं है। यह जीवन के लिए एक पाठ्यक्रम तैयार करता है। जिसे अपेक्षा की गई वस्तु द्वारा निर्धारित किया जाता है। आशा एक नींव है जिस पर पवित्रता का जीवन बसाया जाता है।

सारी मसीही आशा मसीह के प्रगट होने की उम्मीद पर टिकी है। कुछ संदर्भों में "यीशु मसीह का प्रगट होना" मसीह से एक संदेश को दर्शाता है (गलातियों 1:12; प्रकाशितवाक्य 1:1); परन्तु यहाँ इसका अर्थ है, जैसा कि 1:7 में है, अन्तिम समय में यीशु मसीह का प्रगट होना। फिर वह अपनी सारी महिमा में प्रगट होगा। इस वाक्य के तीन महत्वपूर्ण शब्द हैं "आशा," "अनुग्रह" और "प्रगट होना।" सभी तीनों ने पुष्टि की है कि इतिहास कहीं अलग जा रहा है। क्योंकि परमेश्वर सृष्टि का स्रोत है, इसलिये वह निर्धारित करता है कि सृजित आदेश कहाँ जा रहा है। यह जानते हुए कि मानव इतिहास अनुग्रहकारी प्रभु के प्रगट होने के साथ समाप्त हो जाएगा, मसीही ऐसा आशा करते हैं। यीशु मसीह का प्रगट होना, उसी अनुग्रह के समान है जिस पर मसीही अपनी आशा को स्थापित करने के लिए आश्वस्त हैं। आशा का अनुभव किया जाएगा जब परमेश्वर स्वयं को न्याय में यीशु मसीह के आगमन के साथ प्रगट करेगा। प्रगट होना अपने ही में परमेश्वर का अनुग्रह है, जो कि, उसका अनुग्रहकारी कार्य है।

आयत 14. पतरस और याक़ूब के संदेश समान है। याक़ूब चाहता था कि उसके पाठक यह समझें कि विश्वास अपने स्वभाव अनुरूप कर्म करता है। आज्ञाकारी बच्चों की मिसाल में, पतरस चाहता था कि मसीही लोग यह जान सकें कि पवित्रता, उसके स्वभाव से, आज्ञाकारिता पर जोर देती है। आज्ञाकारिता ग्राफिक रूप से, हम इसे इस प्रकार प्रस्तुत कर सकते हैं:

विश्वास : कर्म : पवित्रीकरण : आज्ञाकारिता

(या "विश्वास" "कर्म" के लिये है जैसा कि "पवित्राकरण" "आज्ञाकारिता" के लिये है।)

1:2, 1:14, और 1:22 में, आज्ञाकारिता और पवित्रता एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। सचमुच, पतरस अपने पाठकों को "आज्ञाकारिता के सन्तान" को कहता था, क्योंकि आज्ञाकारिता से उनका चित्रण करना था।[22]

जिस माप तक वे "आज्ञाकारी सन्तान" थे, 1 पतरस के पाठकों को **पुरानी अभिलाषाओं के सदृश न** बनना होगा। मसीह के पीछे चलने वालों को शरीर की अभिलाषाओं से दूर रहना चाहिए जो संसार के व्यवहार को नियन्त्रित करते हैं, जो कि मुख्य विषय था जिस पर प्रेरित 4:2 में वापस चर्चा करेगा। शब्द "अभिलाषाओं" का अनुवाद यहाँ और 4:2 (ἐπιθυμία, *एपीथुमिआ)* दोनों में किया गया है, जिसका उपयोग अच्छी लालसाओं और बुरी लालसाओं के लिए किया जा सकता है। पतरस ने लगातार बुरी लालसाओं को संदर्भित करने के

लिए संज्ञा का प्रयोग किया है। शब्द यौन इच्छाओं तक ही सीमित नहीं है। शब्द का क्रिया रूप स्वर्गदूतों की इच्छाओं के लिये 1:12 में सकारात्मक रूप से प्रयोग किया गया था।

उनके पिछले जीवन के संदर्भ से पता चलता है कि पतरस के पाठकों की बड़ी संख्या में अन्यजाति के लोग विश्वास में परिवर्तित हुए थे। यह सम्भावना नहीं है कि पतरस, स्वयं एक यहूदी था अन्य यहूदियों को उनकी पुरानी इच्छाओं की **अज्ञानता** के बारे में लिखता अन्ततः, यहूदियों को "परमेश्वर के वचन" (रोमियों 3:2) सौंपा गया था। उनके जीवन में अज्ञानता नहीं रही होगी!

जब पतरस ने कहा कि उनके पाठक "सदृश न बनो," तो उसने συσχηματίζομαι *(सुसकेमाटिज़ोमाई)* शब्द का प्रयोग किया,[23] जो नया नियम में केवल यहाँ और रोमियों 12:2 में पाया जाता है। 1 पतरस और रोमियों 12:1, 2 के बीच यहाँ और 2:1 में मौखिक समानताएँ पाई जाती है। यह सम्भव है, बल्कि अवश्य है कि पतरस ने रोमियों की पत्री पढ़ी थी और पौलुस के कुछ शब्दों को अपनी स्वयं की पत्री में शामिल कर लिया था। पतरस के शब्दों से यह अर्थ मिलता है कि विश्वासियों को शरीर की अभिलाषाओं की अनुमति नहीं दी गई है (देखें 4:2) ताकि उन्हें अपनी पुरानी जीवन शैली में वापस खींच लिया न जाए। उसने उन बातों को सूचीबद्ध किया जिनकी विशेषता 4:3 (देखें गलातियों 5:19-21) में पाई जाती है। माइकल्स ने वाक्यांश का अनुवाद किया है, "आवेगों को हवा न दें, जो एक बार आपको उड़ा ले गई थी।"[24] यदि वे ऐसा करते थे, तो वे स्वयं को सांसारिक चलन या जीवन के रंग ढंग में ढाला करते थे, जो पहले उन्हें चित्रित करते थे और जो लगातार उनके समकालीनों को चिह्नित करते थे। इससे भी व्यर्थपूर्ण, वे स्वयं को परमेश्वर से अलग पाएँगे, जिसमें उन्होंने अपनी आशा रखी थी।

यह उल्लेखनीय है कि पतरस ने अपने पाठकों की पुरानी बुरी अभिलाषाओं को उनकी पूर्व "अज्ञानता" से जोड़ा था। परमेश्वर को जानने में असफल, अन्यजाति लोगों के संसार में पाप से फूट पड़ गई थी। यद्यपि यह अज्ञानता के साथ पाप को समझना गलत है, यह भी सच है कि एक ज्ञानवान मन यह समझ जाएगा कि पाप के परिणाम जीवन का नाश, दुःख और परमेश्वर से अलगाव को उत्पन्न करते हैं। पाप और अज्ञानता एक दुसरे के वास्तविक संगी हैं। पतरस के पाठक अब अज्ञानता में नहीं थे। उन्हें सुसमाचार सुनाया जा चुका था (1:12)। उन्होंने अपने शारीरिक स्वभाव की अभिलाषाओं का पालन करने के लिए अज्ञानता का समर्थन किया होगा।

आयत 15. उनकी पहले की अज्ञानता के विपरीत, पतरस ने यहाँ एक मजबूत विरोधी संयोजक का प्रयोग करते और सर्वनाम पर बल देते हुए, उन्हें चिताया, **पर जैसा तुम्हारा बुलानेवाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी पवित्र बनो।** पवित्रता के लिये परमेश्वर की आज्ञाकारिता आवश्यक है। आयत 14 में आज्ञाकारिता के लिये मन लगाना 15 वीं आयत में पवित्रता के लिए अपील करने के बराबर है। आज्ञाकारी संतान बनना "पवित्र" बनना है। परमेश्वर

पवित्रता का मानक है। उसकी सिद्धता मसीही जीवन का लक्ष्य है। यीशु ने कहा, "तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है" (मत्ती 5:48)। परमेश्वर की पवित्रता और सिद्धता मसीह की व्यक्तित्व के देह में वास करते थे। इसलिये उसका जीवन विश्वासियों के लिए आदर्श है, "तुम्हें एक आदर्श दे गया है कि तुम भी उसके पद-चिह्नों पर चलो" (1 पतरस 2:21)। मसीहियों को "मैं केवल मनुष्य हूँ" जैसे वाक्यांशों के साथ अपने पापों का बहाना करने का कोई अधिकार नहीं है। सुसमाचार के बारे में उल्लेखनीय बात यह है कि परमेश्वर मानता है कि हम मनुष्य हैं। उसने मनुष्यों की कमियों को समझा, परन्तु अपने अनुग्रह से, एक उद्धारकर्ता को भेज भी दिया। अनुग्रह के द्वारा उद्धार है, परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह पर विचार नहीं किया जाना है। मानव जीवन का लक्ष्य पवित्रता है अपने स्वयं के प्रयत्नों द्वारा पवित्रता प्राप्त करने में असफलता है जो मसीहियों को अनुग्रह के लिए आकर्षित करती है।

प्रेरित ने मसीहियों को स्मरण कराया कि उन्होंने उद्धार और आशाओं की आशीष का आनन्द मनाया क्योंकि परमेश्वर ने अपनी पहल से उन्हें "बुलाया" था। पतरस ने अपने पाठकों को यह स्मरण कराते हुए अपनी पत्री की शुरुआत की कि वे परमेश्वर के चुने हुए लोग थे। परन्तु, यह कहना नहीं था कि उन्हें परमेश्वर के कार्य योजना से, उनकी अपनी इच्छाओं से अलग बुलाया गया था। उन्होंने अपनी बुलाहट तब प्राप्त की जब उन्हें सुसमाचार सुनाया गया था (1:12)। यदि कोई बच्चा बाहर खेल रहा था और उसकी माता ने उसे रात के भोजन के लिये बुलाया, तो बच्चा उस बुलाहट को अनसुनी कर (आमतौर पर बच्चे ऐसा करते हैं) सकता है, या वह घर के भीतर आकर अपने परिवार के साथ मेज पर बैठ सकता है। जब तक बच्चा खेलता रहता है, तब तक वह बुलाए हुए लोगों में नहीं होगा। यदि वह भीतर आया और भोजन के लिये बैठ गया, तो वह बुलाए हुओं के बीच होगा। अर्थपूर्ण उत्तर, आज्ञाकारिता उन लोगों के लिये जरूरी है जो सुनते हैं, यदि वे परमेश्वर के बुलाए हुए में से हैं।

"पवित्र" की स्कूली छात्र की परिभाषा "परमेश्वर के लिये अलग किया हुआ" उपयोगी है। परन्तु, इसमें परिभाषा की अपर्याप्तता से स्पष्ट है कि परमेश्वर पवित्र है। यह कहना कि परमेश्वर के लिये अलग किया गया परमेश्वर, अधिक कामगार नहीं है। परमेश्वर की पवित्रता उसके उत्थान और उसके अद्भुत महिमा के द्वारा प्रगट होती है; परन्तु इस संदर्भ में, पतरस ने विशेष रूप से परमेश्वर की नैतिक सिद्धता का संदर्भ दिया है। उसकी पवित्रता पूर्व अज्ञानता का प्रतिवाद है जिसमें पतरस के पाठक जीते थे (1:14)। परमेश्वर ऐसा व्यवहार कभी नहीं करता है, जैसा मनुष्य अकसर करते हैं, अन्य व्यक्तियों को अपनी सुविधा के लिये वस्तु के समान उपयोग करते हैं। और परमेश्वर कभी भी द्वेष या छल के साथ काम नहीं करता है वह केवल उसकी सृष्टि का कल्याण चाहता है। यही कारण है कि [अपने] **सारे चाल-चलन में** मसीहियों को पवित्र बनना है। यूहन्ना ने परमेश्वर की पवित्रता को जानकर यह लिखा, "जब हम परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, और उस की आज्ञाओं को मानते हैं, तो इसी से हम जानते हैं, कि परमेश्वर की सन्तानों से प्रेम

रखते हैं। और परमेश्वर का प्रेम यह है, कि हम उस की आज्ञाओं को मानें; और उस की आज्ञाएँ कठिन नहीं" (1 यूहन्ना 5:2, 3)। ग्रडेम ने कहा कि पवित्रता "परमेश्वर और उसकी पवित्रता को हृदय और मन में अन्तर्निहित सहज प्रसन्नता के रूप में बनाए रखना है।"[25]

आयत 16. प्रेरित ने लैव्यव्यवस्था 11:44, 45 की ओर ध्यान दिलाया। परमेश्वर की पवित्रता के बिना, ऐसी अवधारणाओं को, भलाई और बुराई, सही और गलत के रूप में समझना तो दूर उन्हें परिभाषित करने का कोई उपाय नहीं है। जब पतरस ने मसीहियों को जैसा परमेश्वर पवित्र है वैसे पवित्र बनने का आग्रह किया, तो उसने पुष्टि की कि सदाचार और नैतिकता का आधार परमेश्वर की पवित्रता है।[26] अच्छा बनने का अन्तिम कारण यह है कि परमेश्वर अच्छा है। विश्वासी के लिये पवित्रता का अर्थ अनैतिकता और संसार के आदर्शों से अलग रहना है। परमेश्वर की महिमा के लिये किसी का प्रेम और व्यवहार को देने के लिये यह पूर्ण और अनारक्षित समर्पण है।[27]

1:13 में सचेत रहने के लिये समझ, 1:16 में पवित्रता के लिये समझ और 1:17 में पवित्र भय के लिये समझ के बीच एक सम्बन्ध है। सभी तीन अवधारणाओं को परमेश्वर के अस्तित्व में अपने तर्क मिलते हैं। यह कहना कि परमेश्वर पवित्र है जिसका अर्थ है कि वह पूरी रीति से उन प्रकार के व्यवहारों से मुक्त है जो कि पापी को तुच्छ और लज्जित करता है। वह सच्चा, प्रेम, भलाई और अन्य ऐसे गुण हैं और समझौते के बिना ऐसे ही कई गुणों का अधिकारी है। उसकी पवित्रता मसीह के चेलों की पवित्रता के लिये प्रेरणा और नमूना है। मसीही को पहले परमेश्वर को जानना है। तब, क्योंकि वह परमेश्वर को जानता है, वह जानता है कि स्वयं से कैसे व्यवहार करना है। नैतिकता धर्मशास्त्र से बहती है।

अपना जीवन भय से बिताओ (1:17-21)

17और जब कि तुम 'हे पिता' कहकर उससे प्रार्थना करते हो, जो बिना पक्षपात हर एक के काम के अनुसार न्याय करता है, तो अपने परदेशी होने का समय भय से बिताओ। 18क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हारा निकम्मा चाल-चलन जो बापदादों से चला आता है, उससे तुम्हारा छुटकारा चाँदी-सोने अर्थात् नाशवान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ; 19पर निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने, अर्थात् मसीह के बहुमूल्य लहू के द्वारा हुआ। 20उसका ज्ञान तो जगत की उत्पत्ति के पहले ही से जाना गया था, पर अब इस अन्तिम युग में तुम्हारे लिये प्रगट हुआ। 21उसके द्वारा तुम उस परमेश्वर पर विश्वास करते हो, जिसने उसे मरे हुओं में से जिलाया और महिमा दी कि तुम्हारा विश्वास और आशा परमेश्वर पर हो।

परमेश्वर प्रेमी पिता और अद्भुत न्यायी दोनों है। दोनों चित्रण मसीही के लिये भलाई का जीवन जीने के लिये मसीह की भलाई पर आधारित प्रोत्साहन प्रदान करते हैं।

आयत 17. जब पतरस ने लिखा, यदि **आप पिता के रूप में सम्बोधित** करते हैं, तो अर्थ यह नहीं था कि वे परमेश्वर को पिता के रूप में सम्बोधित करने के लिए चुन सकते हैं या नहीं। बल्कि, उसका आधार था कि वे वास्तव में परमेश्वर को इस रीति से सम्बोधित करते थे। न तो कोई सुझाव था, जैसे "जबकि तुम परमेश्वर को पिता कहकर सम्बोधित करने का साहस करते हो।" पतरस ने विचार किया कि "यदि" वाक्य का भाग सच हो। "यदि यह सच है, और यह वही है, जिसे तुम सम्बोधित ... ।" क्योंकि परमेश्वर ने विश्वासी को बुलाया है (1:15), विश्वास करने वाला व्यक्ति परमेश्वर को पुकार सकता है या समर्थन और सहायता के लिये उससे अपील कर सकता है।

परमेश्वर का पिता कहलाना पुराने नियम में अज्ञात नहीं है (भजन संहिता 82:6; होशे 11:1)। जबकि, यीशु ने परमेश्वर और उसकी सृष्टि के बीच सम्बन्ध के लिये एक व्यक्तिगत प्रभावशील और घनिष्टता को जोड़ा, जब उसने परमेश्वर को पिता के रूप में प्रगट किया। सम्भवतः यह इसलिये हुआ क्योंकि यीशु ने बगीचे में अपनी प्रार्थना में "अब्बा" शब्द का प्रयोग किया था (मरकुस 14:36) कि अरामी शब्द यूनानी बोलने वाली कलीसिया में (रोमियों 8:15, गलातियों 4:6) में भेजा गया था। पतरस के लिये, परमेश्वर न तो एक अवैयक्तिक बल है, जिसने संसार को सुचारू रूप से चलाने के लिए बनाया था, न ही वह ज़ीउस जैसे एक मन की इच्छा का देवता, मानव जाति के लिये समस्या उत्पन्न करता था और साथ-साथ उनका समर्थन करता था।

परमेश्वर उन लोगों के लिये पिता है जो उससे प्रेम करते हैं, परन्तु यह प्राथमिक अपील नहीं थी जो कि पतरस ने की थी। यह जबकि अनुमानित अनिवार्यता के लिये आयत 17 के अन्त में अपेक्षित वापस छोड़ देना था। पतरस ने परमेश्वर की पवित्रता और परमेश्वर के पिता होने की अपील की, परन्तु उसने अपने पाठकों को स्मरण कराने में संकोच नहीं किया कि परमेश्वर न्यायी भी था। प्राचीन लोगों को एक ही समय में परमेश्वर को पिता और न्यायी के रूप में किए गए विचार में कोई समस्या नहीं होती थी। उन्होंने सोचा होगा कि विश्वासी को परमेश्वर पिता के सामने भय में जीना, समर्पण में घुटनों में आकर दण्डवत करना उचित होगा। प्रेमी पिता सर्वशक्तिमान परमेश्वर भी है, एक भस्म करने वाली आग है (व्यवस्थाविवरण 4:24; इब्रानियों 12:29)।

यदि मसीही परमेश्वर से प्रेम करने के लिये मांस और पाप के भ्रष्ट प्रभावों से मुक्त कुछ सैद्धान्तिक संसार में थे, तो एक प्रेरणा के रूप में ईश्वरीय जीवन के लिए भय से अपील करने की आवश्यकता नहीं हुई होगी। यही कारण है कि यूहन्ना कह सकता है, "सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है" (1 यूहन्ना 4:18)। मसीही सिद्धता का प्रयास करते हैं, परन्तु इस बीच वे पाप के नाश होने वाले प्रभाव में जीते हैं। इसीलिए पतरस ने विश्वासियों से कहा, **अपना जीवन भय में बिताओ।** यह कि मसीहियों का न्याय किया जाएगा, जो पवित्रता का जीवन जीने की एकमात्र प्रेरणा नहीं है, परन्तु यह एक प्रेरणा है। मसीहियों का न्याय किया जाएगा पवित्रता का जीवन जीने का एकमात्र प्रेरणा नहीं है, परन्तु यह

एक प्रेरणा है। जबकि यह सच है कि इस युग में परमेश्वर का सर्वश्रेष्ठ न्याय स्वयं प्रगट होता है, पतरस ने उस न्याय को ध्यान में रखा था जो कि इस युग को अन्त तक लाएगा। जब "अन्त के समय में" (1:5) उद्धार प्रगट किया जाएगा, तब परमेश्वर न्यायाधीश होगा।

यह आकस्मिक हो सकता है कि पतरस ने प्रत्येक मनुष्य के काम का परमेश्वर द्वारा निष्पक्ष न्याय पर ध्यान दिया है। यद्यपि उन्होंने छल के साथ काम किया, फरीसियों ने सच्चाई की बात करते हुए जब वे यीशु के पास गये यह स्वीकार करते हुए कहा था कि, वह किसी की परवाह नहीं करता था: "तू मनुष्यों का मुँह देखकर बातें नही करता।" (मत्ती 22:16)। परमेश्वर की निष्पक्षता के भाव में, याकूब ने यह कटु सच पाया कि उसके पाठकों ने पक्षपात दिखाया था (याकूब 2:1-4)। सम्भवतः मानव समाज के लिये संसार के "महान लोग" और "निम्न लोगों" से अधिक सार्वभौमिक कुछ भी नहीं है। "महान लोग" आर्थिक या राजनीतिक शक्ति को नियन्त्रित करते हैं। वे दूसरों से अन्तर की अपेक्षा करते हैं और सम्मान प्राप्त करते हैं। संसार के "निम्न लोग" के पास यह सांत्वना है: परमेश्वर पक्षपाती नहीं है। क्योंकि वह निष्पक्ष है, अन्त के दिन में एक बड़ा पलटवार होगा। धनी मनुष्य को अब्राहम ने कहा, "हे पुत्र स्मरण कर, कि तू अपने जीवन में अच्छी वस्तुएं ले चुका है, और वैसे ही लाजर बुरी वस्तुएं: परन्तु अब वह यहां शान्ति पा रहा है, और तू तड़प रहा है" (लूका 16:25)। जब लोग अन्तिम दिन परमेश्वर के सामने खड़े होंगे, तब लाइन के सामने कोई कदम नहीं रख पाएगा। पतरस ने यह स्पष्ट कर दिया कि परमेश्वर निष्पक्ष न्याय करता है।

अर्नेस्ट बेस्ट ने सुझाव दिया कि अनुच्छेद का अर्थ है कि मसीहियों और गैर-मसीहियों का न्याय करने में परमेश्वर कोई भेद नहीं करता है।[28] जिसका निश्चित रूप से पतरस के कथन से कुछ भी लेना देना नहीं है। प्रेरित ने मसीहियों को पवित्र जीवन जीने के लिये चेतावनी दी। उसने उन्हें स्मरण कराया कि परमेश्वर न्यायाधीश है। इसके अतिरिक्त, परमेश्वर प्रत्येक मनुष्य का उसके कामों के अनुसार न्याय करेगा। पौलुस ने भी यही बात कही, "क्योंकि अवश्य है, कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के साम्हने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने अपने भले बुरे कामों का बदला जो उस ने देह के द्वारा किए हों पाए" (2 कुरिन्थियों 5:10)। जबकि यह सच है कि उद्धार परमेश्वर के अनुग्रह से होता है और कोई भी स्वर्ग में प्रवेश के लिये कोई भी अपना मार्ग नहीं बना सकता है, यह भी सच है कि परमेश्वर का न्याय मनुष्य के कामों पर आधारित है। प्रगट है, जैसे याकूब ने पुष्टि की, विश्वास और जिस रीति से कोई व्यवहार करता है, उसे अलग नहीं किया जा सकता (याकूब 2:17)।

यूनानी शब्द παροικία *(पारोइकिआ)* NASB का अनुवाद **अपने परदेशी होने का समय** पर निर्भर करता है। *पारोइकिआ* का अर्थ शब्द παρεπίδημος *(पारेपिडेमोस)* के अर्थ में समान है, जिसका अनुवाद 1:1 में "जो परदेशी के रूप में रहते हैं" किया गया है। धर्मनिरपेक्ष यूनानी समाज में, इन शब्दों को उनके लिये संदर्भित किया जाता है जो किसी शहर में रहते थे परन्तु उनके पास

नागरिकता का कोई अधिकार नहीं होता था। सम्भवतः पतरस के अधिकांश पाठक पूरी रीति से प्रवासी-नागरिक थे, जहाँ वे रहते थे।[29] शहर की सरकारों से पतरस और उसके पाठकों के जो भी रिश्ते थे, भौतिक संसार में जहाँ वे रहते थे उनका कोई स्थायी नाम या पहचान नहीं था। ये शब्द सभी रास्तों से होकर कनान में प्रवासी रहे, अब्राहम के पास वापस पहुँचता है। जब इस मूल पुरुष को सारा के मृत शरीर को मिट्टी देने के लिये स्थान चाहिए था, तो उसे भूमि के स्थायी निवासियों से एक गुफा खरीदनी पड़ी। उसने हेत के पुत्रों से कहा, "मैं तुम्हारे बीच अतिथि और परदेशी हूँ; मुझे अपने मध्य में कब्रिस्तान के लिये ऐसी भूमि दो ..." (उत्पत्ति 23:4)। परमेश्वर ने इस्राएल को भूल जाने की अनुमति नहीं दी थी वे, पतरस के पाठकों के समान पथिक थे, जो उस मार्ग से होकर जा रहे थे जिसके शहर का बनानेवाला परमेश्वर था (लैव्यव्यवस्था 25:23; 1 इतिहास 29:15; भजन संहिता 39:12; इब्रानियों 11:10)।

आयत 18. 1:15, 17 से विषय जारी है। मसीही नैतिकता के उच्च शिखर पर रहते हैं क्योंकि (1) परमेश्वर की पवित्रता विश्वासियों की ओर से पवित्रता को बनाए रखने में विवश करती है और (2) परमेश्वर न्यायाधीश है। पिता परमेश्वर भी न्यायाधीश है। अब प्रेरित ने ईश्वरीय जीवन के लिये एक तीसरी प्रेरणा का परिचय दिया: वे खरीदे गए थे। वे छुड़ाए गए थे। प्रेरित अपने भाइयों और बहनों से चाहता था कि वे भी ऐसे लोग बने जिन्हें परमेश्वर ने वैसा बनने के लिये खरीदा था। वे भय के साथ अपना समय बिताते थे, **जानते हैं कि** [उनका] **छुटकारा चाँदी-सोने अर्थात् नाशवान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ**। उनका छुटकारा विशेष कीमत पर हुआ है। कृदन्त "जानते हो" जो "इसलिए कि तुम जानते हो" या "क्योंकि तुम जानते हो" की बारीकियों को ले सकता है। या तो इस मामले में, पतरस अपने पाठकों से चाहता था कि वे छुटकारा पाए लोगों के समान व्यवहार करें, जिन्हें ऐसा करने के लिये कहा गया था। संक्षेप में, उसने कहा, "वैसा बनो जैसा परमेश्वर ने तुम्हें बनने के लिये खरीदा है।"

क्रूस पर जो हुआ था उसे जानने में विश्वासियों की सहायता करने लिये नये नियम में कई रूपकों का प्रयोग किया गया है। इनमें से एक यह है कि विश्वासियों की आत्माओं की छुड़ौती के लिये मसीह मारा गया।[30] पतरस के समकालीन लोगों में, "छुटकारा पाए लोगों" (*λυτρόομαι, लुटरूमाई)* को आमतौर पर युद्ध के बन्दी या एक दास को मुक्त करने के लिये दाम देकर मोल लेना पड़ता था। यूनानी क्रिया जिसका प्रयोग पतरस ने "छुड़ाया गया" के लिये किया था, वह नए नियम में आम नहीं है जिस प्रकार मसीही मण्डलियों में इसका लगातार प्रयोग होता है। क्रिया केवल लूका 24:21; तीतुस 2:14; और 1 पतरस 1:18 में मिलती है। दो सम्बन्धित संज्ञाएँ पाँच अतिरिक्त बार (मत्ती 20:28; मरकुस 10:45; लूका 1:68; 2:38; इब्रानियों 9:12) में मिलती हैं। समान अर्थों के शब्दों का अनुवाद "छुड़ौती" या "छुटकारा" अन्य दूसरी आयतों में पाए जाते हैं (रोमियों 3:24; 1 कुरिन्थियों 1:30; इफिसियों 1:7; कुलुस्सियों 1:14; 1 तीमुथियुस 2:6; इब्रानियों 9:15)।

यीशु ने स्वयं कहा, “क्योंकि मनुष्य का पुत्र इसलिये नहीं आया, कि उस की सेवा टहल की जाए, पर इसलिये आया, कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुड़ौती के लिये अपना प्राण दे” (मत्ती 20:28; मरकुस 10:45)। केवल परमेश्वर जानता है कि यीशु की मृत्यु क्यों आवश्यक थी, क्रूस पर मानव जाति के पापों का मोल कैसे चुकाया गया, और मेमने के लहू के द्वारा पाप कैसे मिटाया गया। लहू के बलिदान का विचार एक भक्त और देवता के बीच एक मजबूत बन्धन होता था जो प्राचीन संसार में सामान्य बात थी।[31] “छुटकारा,” “मेलमिलाप” (2 कुरिन्थियों 5:19), और “प्रायश्चित” (1 यूहन्ना 2:2) महत्वपूर्ण शब्द हैं जो मसीहियों को मार्गदर्शन करने में सहायता करते हैं क्योंकि वे क्रूस पर यीशु की मृत्यु के महत्व पर प्रकाश डालते हैं। “महा प्रायश्चित्त” बड़े महत्त्व का चौथा शब्द है, यद्यपि अंग्रेजी अनुवादों में इसका प्रयोग पुराने नियम के अनुच्छेदों के लिये सीमित है।[32]

मसीहियों को उनके निकम्मे चाल-चलन से खरीदा गया है। परमेश्वर के साथ भविष्य जीवन के लिये “छुटकारा प्राप्त” होने के अतिरिक्त, पतरस के पाठकों का “छुटकारा” उनके दयनीय जीवन शैली संसार जिसके पीछे चलता थी से हुआ था। यह दूसरी बार है जब पतरस ने ἀναστροφή *(अनास्ट्रोफे)* शब्द का अर्थ “जीवन के तरीके, आचरण, व्यवहार” के लिये प्रयोग किया था। यह वही शब्द है जिसका प्रयोग 1:15 में किया गया था। नए नियम में शब्द की तेरह चर्चाओं में से आठ, पतरस की पत्रियों में पाए गए हैं। स्पष्ट है कि यह शब्द पतरस के लिये महत्वपूर्ण था। मसीहियों को परमेश्वर को आदर देने के लिये और अनन्त विरासत में भाग लेने के लिये केवल पवित्र जीवन जीने की आवश्यकता नहीं थी, परन्तु यह भी चिंता थी कि मसीही जिन परीक्षाओं का सामना कर रहे थे, वे और भी अधिक भयानक हो सकती थी, उन्हें ईश्वरीय व्यवहार में किसी भी बात के लिये उदाहरण होना चाहिए।

एशियाई मसीहियों जिन्हें पतरस ने सम्बोधित किया उनका निकम्मा चाल-चलन था जो [उनके] **बाप-दादों से चला आ** रहा था। क्रूस पर यीशु ने मसीहियों के पिछले व्यर्थ और उजड़े जीवन से छुटकारा दिया। जबकि उनके बाप दादे “निकम्में” चाल-चलते थे भविष्य के लिये यह एक संकेत है क्योंकि पाठक का एक बड़ा समूह अन्य जाति से विश्वास में आया था। अतीत में, उनके बाप दादा, गैर-यहूदी, परमेश्वर के लोगों के उत्तराधिकार के किसी भी अधिकार से बाहर कर दिये गए थे। एक यहूदी, यहाँ तक कि एक यहूदी भी जो मसीह में विश्वास लाता है, कभी भी मूसा के कानून के आधीन निकम्में चाल-चलन के रूप में जीवन के बारे में नहीं बताया।

आयत 19. जो भी हो जिसे लोग मूल्यवान समझते हैं, कोई सोना या चाँदी, कुछ भी नहीं जिसे मनुष्य मूल्यवान समझते हैं, उनके सभी भण्डार में से ऐसा कुछ भी नहीं है जो पाप की भ्रष्ट शक्ति से छुटकारा दे सकता है। छुटकारा जिसका आनन्द मसीही लेते हैं मसीह के **बहुमूल्य लहू ... खरीदा गया है**। संसार का सोना और चाँदी नाशवान और क्षणभंगुर हैं। सोने और चाँदी अविनाशी और

निर्मल, और अजर मीरास (1:4) प्रदान नहीं करते हैं। मसीह का लहू अविनाशी है, क्योंकि उसने जो मोल चुकाया है, वह भ्रष्ट, मिलावटी, या किसी भी वस्तु के द्वारा निरस्त नहीं किया जा सकता है जिसे मनुष्य करते हैं। छुटकारे की महानता जिसके द्वारा मोल चुकाया गया था, मसीहियों के पास ईश्वरीय जीवन जीने के लिये एक शक्तिशाली प्रेरणा है।

पतरस का विश्वास था कि मूसा का नियम और क्रूस पर यीशु की मृत्यु के अनुसार लहू बलिदान की प्रस्तुति के बीच एक सीधा सम्बन्ध था। यीशु एक **निर्दोष और निष्कलंक मेमने के समान था**, जब यहूदियों और रोमियों के आपसी समझौते द्वारा उसकी हत्या कर दी गई थी, जैसे कि वे मानव जाति के प्रतिनिधि थे। क्या पतरस के मन में विशेष रूप से फसह का मेमना था? इसका उत्तर किसी भी रीति से निश्चित नहीं है। सबसे पहला, छुटकारा पहली बात नहीं है जो मन में तब आता है जब कोई निर्गमन 12 में फसह का पालन करने के निर्देशों को पढ़ता है। मेमने का वध और आपूर्ति इतना था कि इस्राएल को स्मरण रहना था कि परमेश्वर ने उन्हें चुनकर मिस्र से छुड़ाया था। छुटकारा से लगता है कि छुटकारे के लिये मेम्ने द्वारा चुकाया गया मोल के साथ कोई सम्बन्ध नहीं होता है। यह सच है कि मेमने को निर्दोष होना था (निर्गमन 12:5), परन्तु, निर्दोष मेमनों का बलिदान बलिदानों की रीति का एक हिस्सा था जिसका फसह के साथ कुछ वास्ता नहीं था (गिनती 28:3, 9, 11)।

दूसरा, फसह को विशेष रूप से एक मेमने की आवश्यकता नहीं थी। बलिदान झुंड के छोटे पशुओं में से एक था, या तो एक भेड़ का बच्चा या एक मेमना। तीसरा, पतरस की चिन्ता थी कि उनके पाठकों ने स्वच्छ नैतिक जीवन जीएँ (1:14, 15)। मसीह का निर्दोष और निर्मल जीवन मसीही व्यवहार के लिये एक आदर्श के रूप में महत्वपूर्ण था। पतरस की चिन्ता उन मेमनों के साथ नहीं थी, जिन्हें पुराने नियम के बलिदानों में चढ़ाया जाता था, परन्तु यीशु के स्वभाव के साथ थी। चौथा, फसह के पर्व में प्रयोग होने के कारण नहीं, यशायाह 53 में इसका प्रयोग होने के कारण पतरस मेमना के रूपक का उपयोग करते हुए दिखाई देता है। उसने यशायाह 53 के शब्दों को 1 पतरस 2:22-25 में अधिक स्पष्ट रूप से लिया है।

उपरोक्त दिए गए कारणों से, यह संभव नहीं है कि, फसह का मेमने पवित्र जीवन के लिये पतरस की सलाह से सम्बन्धित है। इसके अतिरिक्त, यह एक संकेत है कि जिस रीति से हम "मेमने" से आगे बढ़ते हैं, हमें सावधानी बरतनी चाहिए, जब यह मसीह (यूहन्ना 1:29; प्रकाशितवाक्य 5:6 और प्रकाशितवाक्य में कई बार) और "फसह" के संदर्भ में हो। यह सच है कि पौलुस ने यीशु को "हमारा फसह" (1 कुरिन्थियों 5:7) कहा है, परन्तु मेमने का कोई संदर्भ नहीं है। (कुछ अनुवाद, उदाहरण के लिये, NRSV और NIV ने अनावश्यक रूप से शब्द डाले हैं।) वास्तव में, पौलुस ने कहीं भी यीशु को एक मेमने के रूप में सन्दर्भित नहीं किया है। यीशु और फसह के मेमने के बीच एकमात्र स्पष्ट वर्णन यूहन्ना 19:36 में है, जहाँ प्रेरित ने निर्गमन 12:46 में उसके पूरे होने के विषय में कहा

था कि यीशु की कोई भी हड्डी नहीं तोड़ी गई। पास्कल मेमने की अपनी हड्डियों में से कोई भी टूटनी नहीं थी। इसके साथ ही, मेमने के रूप में यीशु के सभी रूपकों के संदर्भ के साथ फसह के मेमने को जोड़ने की अनिश्चितता सबसे अच्छी है।

आयत 20. जैसा कि पतरस ने अपने संदर्भ के द्वारा परमेश्वर के पूर्व-ज्ञान को स्पष्ट किया (1:2), मसीह के आस पास की सभी घटनाएँ और उसकी कलीसिया की स्थापना परमेश्वर के लिए कोई बाद का विचार नहीं है, यह कोई आकस्मिक योजना नहीं थी। यीशु के लिए प्रेरित ने कहा कि **उसका ज्ञान तो जगत की उत्पत्ति के पहले ही से जाना गया था।** जबकि यीशु स्वयं एक व्यक्ति के विषय परमेश्वर का पूर्व-ज्ञान है जिसका पतरस ने दावा किया, सम्भवतः यह कहना ठीक रहेगा कि यीशु के साथ परमेश्वर के छुटकारे के कार्य का पूर्व-ज्ञान भी बताया गया है। "जिसका अनादि काल से निर्णय किया गया है वह मात्र यही नहीं है कि यीशु मसीह को जगत में आना चाहिए परन्तु उसे एक विशेष भूमिका को पूरा करना चाहिए।"[33] परन्तु इस अंगीकार के साथ भी, इस दृढ़ वचन से हटने का यह एक विचारणीय उछाल है कि परमेश्वर ने मानवीय छुटकारे की मसीह में योजना बनाई है, इस निष्कर्ष के लिए कि परमेश्वर का पहले ही से जाना हुआ है, बहुत कम पूर्व निर्धारित, प्रत्येक व्यक्ति की व्यक्तिगत नियति जिसका कभी भी जन्म होगा। मसीहियों के लिए यह आश्वासन वह छुटकारा है वे अनन्त परिणाम का आनन्द मानते हैं। मसीह जिसने अपना रक्त बहाया वह अनन्तकाल से परमेश्वर के साथ विद्यमान है। "जगत की नींव" जगत की रचना के समरूप है, जैसा कि यह नए नियम में सामान्य है (मत्ती 25:34; यूहन्ना 17:24; इफिसियों 1:4; इब्रानियों 4:3)।

यह सनातन यीशु ही था, जगत की उत्पत्ति से पहले ही जाना हुआ, **जो आपके लिए इन अन्तिम समयों में प्रकट हुआ।** यह इस प्रकाश में है कि विश्वासी कष्टों को भांप लेते हैं जो उन्होंने झेलने हैं। कष्ट होने का यह संकेत नहीं था कि परमेश्वर उन्हें भूल गया था। वे तो परमेश्वर की सनातन योजना के भाग हैं जिसमें उन्हें परमेश्वर के लोग होने के लिए चुना गया है। यीशु का आना "आपके कारण से" था। "अन्तिम समय" जिनमें मसीही लोग रह रहे हैं। मसीह के प्रकटीकरण के साथ, परमेश्वर ने निश्चित रूप से कार्य किया। जैसा कि मानवीय छुटकारे के सम्बन्ध में है, परमेश्वर की कोई भी योजना अधूरी नहीं रही है। पतरस और उसके पाठक अन्तिम समयों में रहे और बीसवीं शताब्दी के मसीही अन्तिम समयों में रहते हैं और जब तक मानव इस धरती पर जीवित रहेगा वह अन्तिम समयों में ही रहेगा।

क्योंकि यह अन्तिम समय हैं, विश्वासी प्रभु के दूसरे आगमन, न्याय और किसी भी समय अनन्तकाल में प्रवेश करने के लिए आशा कर सकते हैं। जब पौलुस ने (2 तीमुथियुस 3:1 में) "अन्त के दिनों में" कठिन समयों के विषय लिखा, वह अपने ही दिनों के विषय लिख रहा था। जब इब्रानियों के लेखक ने इस बात पर जोर दिया कि "अन्तिम समयों में" परमेश्वर ने अपने पुत्र के द्वारा

बातें की (इब्रानियों 1:2), उसने उन दिनों के समय के विषय लिखा जब वह जीवित था। पौलुस ने पुराने नियम की घटनाओं के विषय लिखा, "वे हमारी चेतावनी के लिए जो जगत के अन्तिम समय में रहते हैं लिखी गईं" (1 कुरिन्थियों 10:11)। नकारात्मक ढंग से बताया गया, हम इसे "अन्तिम समय" या "अन्तिम दिन" न समझें नए नियम के संदर्भ में प्रभु के आने से पहले क्लेश के समय का उल्लेख करता है। हज़ार वर्ष का राज्य, कलीसिया का उठाया जाना और इस तरह की कल्पनाओं के कोई अर्थ नहीं मिलते हैं। मसीही अन्तिम दिनों में ही रहते हैं और जब अन्तिम दिन पूरे हो जाएँगे जैसा परमेश्वर की इच्छा है, प्रभु वापिस आएगा। इसके बाद न्याय और अनन्तकाल होगा।

आयत 21. प्रभु यीशु "आपके लिए" प्रगट हुआ, पतरस ने पद 20 में कहा। इसमें एक स्पष्टीकरण की जरूरत है। वे कौन हैं जिसके लिए यीशु प्रगट हुआ? प्रेरित ने कहा ये **वे लोग थे जिन्होंने उसके द्वारा परमेश्वर पर विश्वास किया।** उद्धार जो परमेश्वर ने प्रदान किया है वह व्यक्तिगत है। परमेश्वर यीशु मसीह के व्यक्तित्व में कल्पना में पड़े हुए लोगों के लिए नहीं आया था, परन्तु आपके लिए "जो विश्वासी हैं," उन विश्वासियों के लिए जो पतरस के वचनों को पढ़ेंगे। NASB यूनानी भाषा से अनुवाद करने में विश्वासयोग्य है जब इसने अनुवाद किया "विश्वासी" परन्तु नया नियम में अक्सर प्रतीति शब्द का भी प्रयोग किया गया इस भाव के साथ जो आस्था के समीप ले जाता है। REB इसे इस तरह से अनुवाद करता है, "जिसके द्वारा तुमने परमेश्वर पर प्रतीति की है।" उन्होंने परमेश्वर पर भरोसा रखा, परन्तु उनको यह प्रतीति करनी है क्योंकि यीशु ने पिता को प्रकट किया, इस तरह से यह "उसी के द्वारा" था कि एशिया के मसीही विश्वासी हैं। यह स्पष्ट है कि यह कथन और यूहन्ना 14:1, 6 इसी विचार से आते हैं।[34] यीशु नासरी के द्वारा परमेश्वर पर विश्वास क्योंकि (1) यीशु ने पिता को प्रकट किया जो पहले किसी नबी या बुद्धिमान व्यक्ति ने नहीं किया (यूहन्ना 7:28, 29; 15:15)। (2) यीशु ने पाप की रुकावट को हटा दिया ताकि मनुष्य परमेश्वर के साथ संगति रख सकें (रोमियों 5:1; 1 यूहन्ना 1:7)। (3) यीशु यहाँ तक वर्तमान में भी परमेश्वर और मनुष्य के बीच मध्यस्थता करते हैं (1 तीमुथियुस 2:5; इब्रानियों 7:25)।

प्रेरित ने पहले ही यीशु के रक्त की याचना की थी, अर्थात उसी मृत्यु की। इस समय, उसने स्पष्ट किया कि संदेश जो मसीह की मृत्यु की घोषणा करता है वह पराजय का नहीं है परन्तु विजय का है, किसी की मृत्यु का नहीं परन्तु जीवन का। परमेश्वर ने **उसे मृतकों में से जीवित किया और उसे महिमा दी।** पौलुस ने इस बात पर जोर देने के द्वारा रोमियों की पत्री का आरम्भ किया कि परमेश्वर ने यीशु की घोषणा की "और पवित्रता की आत्मा के भाव से मरे हुओं में से जी उठने के कारण सामर्थ्य के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है" (रोमियों 1:4)। उसने विश्वास के मूल अंगीकार को उल्लेखित किया, कोई व्यक्ति इसे मसीहियत का धर्म विश्वास कह सकता है, "कि पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया, और गाड़ा गया, और पवित्र शास्त्र के अनुसार

तीसरे दिन जी भी उठा" (1 कुरिन्थियों 15:3, 4)। मसीही का सार - परमेश्वर पर विश्वास और अनन्तकाल की आशा यह है कि यीशु मरा और फिर मनुष्यों के सामने प्रकट हुआ, परमेश्वर की सामर्थ्य के द्वारा जीवित किया गया। परमेश्वर ने पुनरुत्थान के द्वारा "महिमा" दी, - या परमेश्वर के दाहिने हाथ पर उसका अधिरोहण करने के द्वारा जहाँ वह राज्य करता है (प्रेरितों के काम 2:33; रोमियों 8:34; 1 कुरिन्थियों 15:25)। महिमा जिसका यीशु ने अनुभव किया वह महिमा है जिसमें उसके अनुयायी सहभागी होंगे (1:8, 11)।

इन सब का परिणाम यह है जो परमेश्वर ने यीशु मसीह के द्वारा विश्वासियों के लिए किया - इसलिए कि **तुम्हारा विश्वास और आशा परमेश्वर में है**। शब्द "विश्वास" और "आशा" विशेष रूप से जब विश्वास को प्रतीति समझ लिया जाता है अर्थ दोनों का ही वही है, फिर भी इनका अपना स्तर है। विश्वास का सम्बन्ध वर्तमान काल की परिस्थितियों से है जिसमें मसीही जीवन व्यतीत करते हैं। पहले पतरस ने कहा मसीही विश्वास से परमेश्वर के द्वारा बचाए गए, तब उसने कहा, "भले ही तुमने उसे नहीं देखा" (1:5, 8)। "विश्वास" का अर्थ परमेश्वर पर भरोसा रखना है, भले ही अनुभवाश्रित प्रमाण का अभाव हो। दूसरी ओर, "आशा" भविष्योन्मुखी होती है। जबकि मसीह में आशीषें पहले ही से हमारे पास हैं, एक जीवित आशा (1:3) भविष्य की ओर बढ़ती है और अनन्त विरासत विश्वासियों के लिए परमेश्वर के पास है।

अविनाशी बीज के द्वारा नया जन्म (1:22-25)

22अतः जब कि तुम ने भाईचारे की निष्कपट प्रीति के निमित्त सत्य के मानने से अपने मनों को पवित्र किया है, तो तन-मन लगाकर एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो। 23क्योंकि तुम ने नाशवान नहीं पर अविनाशी बीज से, परमेश्वर के जीवते और सदा ठहरने वाले वचन के द्वारा नया जन्म पाया है। 24क्योंकि हर एक प्राणी घास के समान है, और उसकी सारी शोभा घास के फूल के समान है। घास सूख जाती है, और फूल झड़ जाता है, 25परन्तु प्रभु का वचन युगानुयुग स्थिर रहता है। और यही सुसमाचार का वचन है जो तुम्हें सुनाया गया था।

दूसरी बार, प्रेरित ने मसीही जीवन के आरम्भ का वर्णन किया (1:3, 23)। "तुमने नया जन्म पाया है," उसने कहा। मसीहियों के जीवनों को परमेश्वर के उस प्रकार के लोगों को प्रकट करने की जरूरत है जिनके पाप उसने क्षमा किए और उन्हें अपने निज लोगों में गिन लिया।

आयत 22. तीसरी बार, पतरस ने अपने पाठकों की आज्ञाकारिता का उल्लेख किया (1:2, 14, 15, 22); तीसरी बार यह स्पष्ट था कि आज्ञाकारिता और पवित्रता एक ही कपड़े के दो टुकड़े हैं। **शुद्ध किया गया** यूनानी भाषा में यह पूर्ण कृदन्त है। कृदन्त का बल अनुमोदन सूचक हो सकता है, क्योंकि तुम ... या कारण वाचक है, **क्योंकि तुमने ...** । NASB अनुवादकों ने अनुमोदन सूचक बल

के लिए विकल्प चुना है: “क्योंकि तुमने सत्य को मानने में अपने मनों को शुद्ध किया है।” यह तो मुश्किल से एक संयोग ही है कि आज्ञाकारिता और पवित्रता दोनों ही स्थानों में नये जन्म के स्मरण की ओर ले जाता है 1:2, 3 और 1:22, 23. समर्थन करने के लिए **सत्य** कथन से बढ़कर है। **सत्य** को मानना है। यह सच्चाई भाववाचक नहीं थी जिसे पतरस के पाठकों ने माना था। विशेष रूप से उन्होंने सुसमाचार की सच्चाई को माना था; उन्होंने उस सच्चाई पर विश्वास किया था कि यीशु उनके लिए मरा, और उन्होंने उस आज्ञार्थक क्रिया का प्रत्युत्तर दिया जो सच्चाई में निहित थी। जब उन्होंने सच्चाई को माना उसी समय उन्होंने नया जन्म पाया और परमेश्वर के राज्य के लिए पवित्र हुए। रेमण्ड केल्सी ने पतरस के विषय कहा, “वह पीछे मुड़कर उस समय को देख रहा था जब उसके पाठकों ने सुसमाचार के प्रति विनम्र आज्ञाकारिता के द्वारा अपना प्रत्युत्तर दिया था - उस समय जब वे सत्य की अपेक्षाओं के प्रति समर्पित थे।”[35]

यूनानी पूर्ण काल एक क्रिया का उल्लेख करता है जो भूतकाल में हुई थी परन्तु जिसके परिणाम वर्तमान काल में जारी थे। पतरस ने अपने पाठकों से कहा, “तुमने ... अपने मनों को पवित्र किया।” पूर्ण काल का प्रयोग करते हुए प्रेरित ने अपने पाठकों को पीछे मुड़कर देखने के लिए कहा जब उन्होंने नया जन्म पाया था। वर्षों पहले पतरस ने यरूशलेम में लोगों की भीड़ से कहा था उनको पश्चाताप करना था और अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेना था (प्रेरितों के काम 2:38)। जब लगभग 3000 लोगों ने पतरस के द्वारा बताई गई सच्चाई को माना था, उनके मन पवित्र हो गए थे। पौलुस ने नया जन्म को “नए जन्म के स्नान” अर्थात नये जन्म के रूप में उल्लेख किया (तीतुस 3:5)। नये जन्म का अर्थ पानी में बपतिस्मा के रूप में गाड़े जाने से बढ़कर है, परन्तु पानी में बपतिस्मा के बिना नये जन्म नहीं हो सकता। क्योंकि उन्होंने सच्चाई को मानने से अपने मनों को पवित्र किया था, प्रेरित ने अपने पाठकों को नया जन्म पाए हुए लोगों के समान व्यवहार करने की बिनती की।

क्योंकि मसीहियों ने भाईचारे के निष्कपट प्रेम के लिए अपने मनों को पवित्र किया था, पतरस ने उनको तन मन लगाकर एक दूसरे से अधिक प्रेम करने के लिए अनुरोध किया। कैली ने लिखा,

> . . . ऐसा लगता है लेखक मसीहियों को समझाने के कार्य से हट सा गया है, जैसा उसने मूर्तिपूजकों का विरोध किया अर्थात जीवन आचरण का [1:15, 17, 18] । अब इस ओर मुड़ता है, वह भाई चारे के निष्कपट प्रेम को पवित्रता और ईश्वरीय भय के साथ बपतिस्मा पाए हुए मसीहियों के चिन्ह के रूप में जोड़ता है।[36]

मनों को पवित्र करने का अर्थ स्वयं को पवित्र करने से बढ़कर और कुछ नहीं है। पतरस के पाठकों ने सच्च में कहा जाए तो स्वयं को पवित्र नहीं किया था; इसके बजाय, परमेश्वर ने उनको पवित्र किया क्योंकि प्रभु यीशु ने “मेमने के रूप में अपना बहुमूल्य लहू बहाकर” उन्हें छुड़ाया था (1:19)। अभी भी सच्चाई को

मानने का निर्णय उनका अपना ही था। पेन्तेकुस्त के दिन पतरस के उपदेश के बाद, लूका ने वर्णन किया, "उस ने बहुत ओर बातों में भी गवाही दे देकर समझाया कि अपने आप को इस टेढ़ी जाति से बचाओ" (प्रेरितों के काम 2:40; NRSV)।[37] विश्वासियों की आज्ञाकारिता का प्रत्युत्तर एक प्रभावशाली कार्य है जो पापों की क्षमा का परिणाम होता है।

पतरस ने अपने पाठकों को स्मरण करवाया कि जब उन्होंने सुसमाचार के संदेश की आज्ञार्थक क्रिया का प्रत्युत्तर दिया अर्थात जब उन्होंने विश्वास किया था, पश्चाताप किया था, और बपतिस्मा लिया था - उन्होंने ऐसे लोगों की संगति को ग्रहण किया था जिनके लिए एक दूसरे के प्रति प्रेम से बढ़कर अन्य कोई व्यवहार करने का नियम नहीं था। पौलुस की तरह (1 कुरिन्थियों 13:13; 1 थिस्सलुनीकियों 1:3), पतरस ने "विश्वास," "आशा" (1:21), और "प्रेम" के रूप में आंतरिक बल को रखा जहाँ से मसीही जीवन बहता है। विश्वासियों के बीच में एक दूसरे की देखभाल करने, आदर करने, मान सम्मान से व्यवहार करने से बढ़कर अन्य कोई नियम नहीं है। यीशु ने कहा, "यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे, कि तुम मेरे चेले हो" (यूहन्ना 13:35)। यूहन्ना ने अपनी पत्री में लिखा, "क्योंकि जो समाचार तुम ने आरम्भ से सुना, वह यह है, कि हम एक दूसरे से प्रेम रखें" (1 यूहन्ना 3:11)।

भाईचारे के प्रेम के लिए पतरस ने जो यहाँ शब्द प्रयोग किया वह φιλαδελφία *(फिलाडिलेफिया)* था, जिस नाम से पेनसिलवानिया में एक नगर भी है। 3:8 में उसने फिर इस शब्द का प्रयोग किया। सत्य को मानना अपने मनों को शुद्ध करना, उसी समय समाज को भी गले लगाना था जहाँ सभी साथी, भाई और बहन थे। मानवता के प्रति प्रेम के कारण ही यीशु ने मानव रूप धारण किया (यूहन्ना 3:16)। एक भाव है जिसमें मसीह के शिष्यों को प्रभु के आदर्श पर चलना है, और मानवता से प्रेम करना है। विश्वासियों के परिवार में अभी प्रेम बन्धन गहनता से है या सभी के लिए प्रेम की एकाग्रता को महसूस किया गया है (गलातियों 6:10)। पतरस का विचार यह था : क्योंकि तुमने संदेश का पालन किया जो उन लोगों के साथ निष्ठा से प्रेम करने को समर्पित किया है जो आपके विश्वास और आशा में सहभागी हों और वह बन गए जिसके लिए परमेश्वर ने चुना और हृदय से एक दूसरे से अधिक प्रेम करें।

प्रेम को दूसरी बार अपने उल्लेख करने में प्रेरित का क्रिया ἀγαπάω *(अगापाओ)* की ओर मुड़ने का कोई विशेष महत्व नहीं है। "इसमें कोई संदेह नहीं कि पतरस भाई चारे के प्रेम को और एक दूसरे के साथ प्रेम को एक ही भाव में समझता है।"[38] उसने अपने पाठकों से पवित्र संत बनने का अनुरोध किया जिसे परमेश्वर ने बनाया जब उन्होंने सच्चाई को माना, उसने उनके मनों को पवित्र किया। पतरस का आज्ञार्थक क्रिया शब्द "अधिक" महत्वपूर्ण संयोजन है। यूनानी भाषा में शब्द को दृढ़ता पूर्वक रखा गया है - वाक्य के अन्त में। विश्वासियों का प्रेम - एक दूसरे के लिए प्रेम लगातार, विशुद्ध, अभिव्यक्ति करने के लिए उत्सुक होना था। दूसरी शताब्दी में जटिल मूर्तिपूजकों के रूप में भाईचारे के प्रति

जागरूक हुए जिन्होंने मसीह के नाम को धारण किया, उन्होंने टिप्पणी की, कभी-कभी आक्षेपपूर्वक, स्वैत्याग भक्त मसीहियों पर - जो उनका एक दूसरे के प्रति था। पतरस बाद में भाईचारे के विचार पर आया जैसे उसका पत्र प्रकट किया गया (2:17; 5:9)।

आयत 23. पिछले पद में, अपने पाठकों की पवित्रता का वर्णन करने के लिए पतरस ने पूर्ण काल का प्रयोग किया। यहाँ अब उसने उनके नए जन्म का वर्णन करने के लिए एकबार फिर पूर्ण काल का प्रयोग किया। **तुम ने नाशवान नहीं पर अविनाशी बीज से, परमेश्वर के जीवते और सदा ठहरने वाले वचन के द्वारा नया जन्म पाया है।** सच्चाई के प्रति उनकी आज्ञाकारिता और उनके नए जन्म इन दोनों का परिणाम एक दूसरे के प्रति निष्कपट प्रेम था। सच्चाई के प्रति आज्ञाकारिता, पवित्रता और नया जन्म स्वयं को प्रमाणित करने की धारणा नहीं थे। प्रत्येक शब्द अन्य दो के साथ अंतर्निहित होता है। इससे पहले प्रेरित ने कहा था कि मसीहियों को जीवित आशा के लिए नया जन्म दिया गया है (1:3)। यहाँ वह नए जन्म को अविनाशी बीज के साथ जोड़ता है, **जीवित और सदा रहने वाला परमेश्वर का वचन**।

जब यीशु ने नीकुदेमुस से नए जन्म के विषय बातचीत की, उसने नए जन्म को बपतिस्मा ("जल से जन्म"; यूहन्ना 3:5) और पवित्र आत्मा से सुरक्षित रूप से दोनों के साथ जोड़ा। (नए जन्म के लिए 1:3 की टिप्पणी को देखें।) 1:3 में नया जन्म यीशु मसीह के पुनरुत्थान के द्वारा था। यहाँ अविनाशी परमेश्वर के वचन से है, वह संदेश कि यीशु परमेश्वर की सामर्थ्य के द्वारा मृतकों में से जीवित किया गया। परमेश्वर के वचन के साथ बराबर नहीं, पवित्र आत्मा वचन में और वचन के द्वारा कार्य करता है। एक श्रेष्ठ दृष्टिकोण से, वचन सुसमाचार था जो उन्हें प्रचार किया गया था (1:12)। अन्य दृष्टिकोण से यह पवित्र आत्मा की गतिमान सामर्थ्य थी। वचन की रचनात्मक सामर्थ्य से पुराने नियम के पाठक भली-भान्ति परिचित थे। परमेश्वर के बोले गए वचन के द्वारा, सारी सृष्टि अस्तित्व में आई (उत्पत्ति 1:3), और इसके द्वारा परमेश्वर ने मनुष्यों के कार्यों में शासन किया (भजन संहिता 33:9)।पवित्र आत्मा के प्रेरणादायी वचन के द्वारा, मसीहियों ने नया जन्म पाया है। उनके अन्दर जीवित गुण होने के लिए पतरस ने पवित्रशास्त्र का समझ लिया था, जीवित क्योंकि पवित्र आत्मा जो उत्प्रेरित करता है और सामर्थ्य देता है वह जीवित है। वचन न केवल जीवित है, यह जीवित रहता है। यह सदा रहने वाला है।

वचन चाहे बोला हुआ हो या लिखा हुआ हो, परिणाम लाने के लिए इसमें सामर्थ्य है। जैसे पवित्र आत्मा चलता फिरता है जहाँ उसकी इच्छा होती है (यूहन्ना 3:8), उसी तरह से वचन लोगों के हृदयों में रहस्यमय सामर्थ्य के रूप में युक्ति करता है। यह जीवनों को बदलता है। "उस ने अपनी ही इच्छा से हमें सत्य के वचन के द्वारा उत्पन्न किया" (याकूब 1:18)। पवित्र आत्मा का कार्य या वचन का कार्य के विषय एक दूसरे की अनुपस्थिति में बात करना निरर्थक है। अविनाशी बीज जिसके द्वारा मसीहियों ने नया जन्म पाया पतरस के पाठकों के

लिए सच्चाई को मानने के बराबर है जिसका परिणाम उनकी पवित्रता है। पतरस ने परमेश्वर के "अविनाशी" बीज की तुलना मानवीय उत्पत्ति के "विनाशी" बीज से की है। जैसा यूहन्ना 1:13 में मानवीय बीज और दिव्य बीज के बीच एक सचेतन अन्तर है। इस संसार में मानवीय जीवन अल्पकालिक है। यह क्षण भंगुर है; यह सदा बना नहीं रहेगा। वह बीज जिसकी जागृत करने वाली सामर्थ्य नया जन्म देती है वह बना रहने वाला और सनातन है। जिस तुलना की उसने आशा की थी वह आने वाले पदों में स्पष्ट होती है।

आयत 24. नया जन्म, जिसका माध्यम अविनाशी बीज है, वह सदा रहनेवाला परमेश्वर का वचन है, यह विचार पतरस के मन में यशायाह 40:6-8 से आया (भजन संहिता 103:15-17 से तुलना करें)। यह भाग पिछले पद का समर्थन करता और उसे दृढ़ करता, अर्थात परमेश्वर का वचन हमेशा बना रहता है। याकूब ने भी यशायाह के बाइबल अंश को इंगित किया (याकूब 1:11), परन्तु प्रभु के भाई ने अन्तर बताने के लिए इसका उल्लेख किया भिन्न पर सम्बन्धित बात के लिए किया। वह उल्लेख सेप्टुआजिंट (LXX) से है, भले ही पतरस ने उसमें थोड़े - थोड़े बदलाव किए हैं। पुराने नियम को इब्रानी भाषा से यूनानी भाषा में यीशु के जन्म के लगभग दो सौ वर्ष पहले अनुवाद किया गया था। सेप्टुआजिंट उन यहूदियों में व्यापक रूप से प्रयोग किया जाता था जो यूनान-रोमी जगत में फैले हुए थे। नए नियम के समय में, बहुत से यहूदी यूनानी जगत के साथ ढल गए थे। उनको उनकी बोली जाने वाली भाषा में एक अनुवाद की जरूरत थी जैसे आजकल के आधुनिक जगत के पाठकों को अंग्रेजी अनुवाद की जरूरत है।

यशायाह 40:6-8 नबी के संदर्भ में एक उद्देश्य है जिसका पतरस के साथ कोई विशेष सम्बन्ध नहीं है। जिन लोगों को यशायाह ने सम्बोधित किया वे बाबुल के देश में निष्कासन के रूप मे मुरझाए हुए थे। ऐसी सम्भावना थी कि परमेश्वर की सारी प्रतिज्ञाओं का त्याग कर देते - वास्तव में वे परमेश्वर का ही त्याग कर देने वाले थे। परमेश्वर ने अपने लोगों को शांति देने के लिए अपने नबी को भेजा, उनको यह स्मरण करवाने के लिए कि परमेश्वर निर्जन प्रदेश में से उनके लिए उनके देश में जानें का एक मार्ग तैयार कर रहा था। मानवीय सामर्थ्य आती है जाती है; साम्राज्य उठते हैं और गिरते हैं। सारे प्राणी एक घास के समान थे। परमेश्वर का वचन, उसकी प्रतिज्ञा विश्वासयोग्य थे। वह हमेशा बना रहता है।

पतरस ने ऐसा कोई दावा नहीं किया कि यशायाह ने उन मसीहियों की दशा का वर्णन करना चाहा जो एशिया में अपने विश्वास के कारण से दुख उठा रहे थे। इसके बजाय पतरस ने प्रतिज्ञा में देखा कि परमेश्वर का वचन कभी टलता नहीं है एक सिद्धान्त जो उसके पाठकों के लिए सच्चा था और इसके साथ - साथ यशायाह के मूल सुनने वाले लोगों के साथ भी। यशायाह से यह बाइबल अंश मानवजाति जो है उनकी दयनीय अनिश्चितता और जो कुछ वे करते हैं उनको जाँचता है। लोग स्थिरता और निरंतरता को ढूँढते हैं, **परन्तु सब प्राणी घास के**

समान हैं ... घास सूख जाती है और फूल झड़ जाता है। प्राणी और इसकी सारी महिमा मानवीय अनुभव को कोई एकजुट विषय, कोई समानता नहीं देती बजाय इसके सड़ने की निश्चितता के। प्राणी सूख जाता है। इसके सबसे सराहनीय और महान गुण कम हो जाते हैं और भूला दिए जाते हैं। न यशायाह के श्रोता और न ही पतरस के मानवीय कृति में भरोसा रखने में समझदार होंगे। परमेश्वर और उसका वचन ही मात्र जीवन की वास्तविकताओं के लिए स्थाई है।

आयत 25. यह परमेश्वर स्वयं है और उसका स्वयं-प्रकाशन है जो जीवन को सद्भाव, अर्थ और उद्देश्य प्रदान करता है। मानवीय महिमा और मानवीय अनुभव के विपरीत, परमेश्वर और उसका वचन हमेशा बना रहता है। पद 1:23 से λόγος (*लोगोस*, "वचन") पद 1:25 में ῥῆμα (*रेहमा*, "वचन") एक रुचिकर परिवर्तन है। इस संदर्भ में दो शब्द समानार्थी हैं। बाद का शब्द LXX में प्रयोग किया गया है। जो बात पतरस ने कही उस पर इन शब्दों का कोई प्रभाव नहीं है। यह "जीवित और सदा रहने वाला परमेश्वर का वचन (लोगोस) है" जिसे यशायाह 40:8 **परमेश्वर का वचन** (रेहमा) कहता है। पतरस ने कहा यह परमेश्वर का वचन **जो सदा बना रहता है** जो उनको प्रचार किया गया।

पतरस के विचार में निरंतरता को अनदेखा न करें जब वह 1:22 से आगे बढ़ता है। यह सच्चाई को मानने के द्वारा ही था कि मसीहियों ने अपने मनों को पवित्र किया था। जिस सच्चाई को उन्होंने माना था वह अविनाशी, जीवित और सदा रहने वाले परमेश्वर के वचन में अंतर्निहित था। सच्चाई को मानने के द्वारा उन्होंने नया जन्म पाया था। सच्चाई, "परमेश्वर का वचन" जो "सदा बना रहता है," और **वचन जो पतरस के पाठकों को प्रचार किया गया था** एक समान थे। हर कहीं, समय और स्थान, जब वचन की सच्चाई का प्रचार किया जाता है, मसीहियों से उस परिणाम की आशा की जाती है। लोग नया जन्म पाएंगे और सनातन विरासत में भागी होंगे।

अनुप्रयोग

पवित्रता और बपतिस्मा (1:3-25)

भले ही शब्द "बपतिस्मा" पतरस की पहली पत्री (3:21) में एक ही बार आया है, बाइबल के चौकस विद्यार्थी बहुत पहले ही जान गए थे कि बपतिस्मा पत्री का मुख्य विषय है। जबकि बपतिस्मा और नया जन्म बराबर नहीं होने चाहिए, न ही इनकी निकट संगति को खारिज किया जा सकता है। जब किसी विश्वासी का बपतिस्मा होता था, उसका नया जन्म फलवंत होने की ओर बढ़ता था। पौलुस ने इससे एक कदम आगे अलंकार लिया जब उसने कहा कि विश्वासी बपतिस्मा से "नए जीवन की चाल चले" (रोमियों 6:4)। कोई संदेह नहीं हो सकता कि पतरस ने 1 पतरस 1:3 में मसीही बपतिस्मा का उल्लेख किया और 1:23 में जब उसने "नया जन्म" शब्दों का प्रयोग किया। यह नया जन्म "उस बीज से नहीं जो विनाशी बीज है परन्तु अविनाशी से है।"

पवित्रता नए जन्म के विचार से कभी भी दूर नहीं होती। बीज अविनाशी है, और विश्वासी पवित्र है। किसी समकालीन संगीत के शब्द सुनने से यह एक शैक्षिक अनुभव है। तुरन्त संतुष्टि यह आज की आवाज है। लोग किसी भी बात की प्रतीक्षा नहीं करना चाहते। प्रख्यात टेलीविजन कार्यक्रम तुरन्त संतुष्टि की आवाज को बढ़ावा देते हैं। लाखों लोग जो अच्छा लगता है वही करना और उसे अभी करना इससे बढ़कर ऊँची बुलाहट के साथ नहीं जीवन जीते। मसीही संदेश जीवन के मौलिक पुनःस्थापन के लिए बुलाता है - इतना मौलिक, वास्तव में इसे ही नया जन्म कहा जा सकता हैं। एक मसीही का लक्ष्य तुरंत संतुष्टि नहीं है परन्तु परमेश्वर की महिमा करना है।

मसीही लोग एक ऐसे संसार में रहते हैं जहाँ तुरंत संतुष्टि आधुनिक पूंजीवाद की संचालक शक्ति है और इस तरह के संसार में उनको पवित्र रहना है। पतरस के पाठकों को मसीही होने के नाते पवित्र जीवन जीने और अपने अपने अविश्वास के समय के पुराने अनैतिक जीवन के बीच का स्पष्ट अंतर मालूम था। अब सम्भवतः, आज के संसार और पतरस के समकालीन संसार में भिन्नता है। आधुनिक संसार में पवित्र और अपवित्र के बीच सीमा रेखा अक्सर धुंधली हो जाती है। मसीही कभी - कभी सीमा रेखा को धुंधली करने में योगदान देते हैं। जब संसार बुलाता है, तो कुछ कहते हैं, “निश्चय ही हमें सभी मजाक को बंद करने की जरूरत नहीं है, क्या हमें ऐसा करना चाहिए? हमें पवित्रता के विषय में अधिक दूर तक जाने की आवश्यकता नहीं।” ऐसे मसीही हैं जो डरते हुए दिखाई देते हैं कि कहीं संसार उन्हें आज के समय की सबसे खतरनाक उपाधि, “कट्टरपंथी” न दे दे। कुछ सोच सकते हैं राजा की संतान होने के नाते इसके प्रति गम्भीर हैं।

हमारे संसार में कामुकता के प्रति व्यापक आकर्षण को देखकर अधिकांश मसीही दुखी और निराश हो जाते हैं। मुझे हैरानी होती है यदि यहोशू के शब्द प्राचीन इस्राएल के लिए आधुनिक कलीसिया पर उपयुक्त नहीं होंगेः “तुम से यहोवा की सेवा नहीं हो सकती; क्योंकि वह पवित्र परमेश्वर है; वह जलन रखने वाला ईश्वर है . . .” (यहोशू 24:19)। क्या हम पवित्रता की चुनौती के स्तर तक हैं? मुझे नहीं मालूम कि हमारा उत्तर क्या होगा। मूसा ने इसका उत्तर इस तरह से दिया : “यह जो आज्ञा मैं आज तुझे सुनाता हूं, वह न तो तेरे लिये अनोखी, और न दूर है। परन्तु यह वचन तेरे बहुत निकट, वरन तेरे मुंह और मन ही में है ताकि तू इस पर चले” (व्यवस्थाविवरण 30:11, 14)।

पतरस दो स्रोत प्रदान करता है जिनमें से एक विश्वासी शान्ति प्राप्त कर सकता है जैसे-जैसे वह पवित्र होने के लिए इस अपवित्र संसार में संघर्ष करता है। पहला, पवित्रता अपने संगी विश्वासी से भाईचारे के प्रेम को देने और लेने से समर्थन प्राप्त करती है जो पवित्र नगर की ओर यात्रा में उसके साथ है। पतरस जानता था कि उसके पाठकों की पवित्रता और आज्ञाकारिता का परिणाम निष्कपट प्रेम में है, परन्तु उसने उन्हें और अधिक प्रोत्साहित किया, “तो तन-मन लगाकर एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो” (1 पतरस 1:22)।

दूसरा, पवित्रता सनातन है; संसार का मान सम्मान और प्रवृत्तियाँ

अल्पकालिक हैं। पतरस ने कहा कि विश्वासियों ने अविनाशी बीज से नया जन्म पाया है। मनुष्य की सारी शोभा, जिसके लिए वह अपना सारा जीवन देता है, उसकी सारी सम्पत्ति, उसका सारा ज्ञान, उसका सारा अच्छा समय वह सब घास के फूल के समान झड़ जाएगा। परमेश्वर का वचन सदा बना रहता है। "और यही सुसमाचार का वचन है जो तुम्हें सुनाया गया था।" (1:25)।

पतरस ने अपने पाठकों को बताया कि शारीरिक और मानसिक सताव से कोई राहत नहीं है। इसके विपरीत, उसने कहा कि स्थितियाँ और भी गम्भीर हो सकती है। जो कुछ भी आया, प्रेरित चाहता था उसके पाठक जान जाएँ कि वह परमेश्वर के लोग थे और परमेश्वर के लोग पवित्र थे। जो लोग प्रभु यीशु का नाम धारते हैं उनके जीवन का भाग पवित्रता है बीसवीं शताब्दी में इससे बढ़कर और कोई जरूरी बात नहीं है। समझौते और बहानेबाजी का कोई स्थान नहीं है। आज कुछ ही मसीही हैं (कम से कम अमेरिका में) जो मसीही होने के नाते शारीरिक हिंसाओं का भय रखते हैं। आज पाप हमें अपनी बाँहों में भरता है और हमें बताता है कि हम आखिरकार इंसान ही हैं। हम अपने लिए बहुत कुछ की आशा नहीं रख सकते। इसके परिणामस्वरूप, आज मसीही अक्सर वास्तव में कभी नहीं मानता कि पवित्रता जीवन के लिए एक चुनने का अधिकार है। यह जानना बड़ी बुद्धिमानी है कि परमेश्वर ने पवित्र लोगों को छुड़ाया है।

जीवित आशा (1:3, 21)

आशा के प्रति आकर्षित होना खतरनाक हो सकता है। यह फ्रांसिस बाकोन (1561-1626) ही थे जिन्होंने ऐसी समीक्षा की, "आशा आरम्भ में अच्छी लगती है परन्तु इसका अन्त बुरा होता है।"[39] आशा निराशा का शब्द हो सकता है। जुलाई 1968 में, मैं कलीसिया के साथ कार्य करने के लिए वेस्ट वर्जीनिया, फेयरमोंट में चला गया। कुछ ही महीनों के बाद, वेस्ट वर्जीनिया के फारमिंगटोन नौ नम्बर खान में कुछ ही मील दूर शताब्दी की सबसे भयानक खदान दुर्घटना हुई। 78 व्यक्ति गायब थे। ऐसा लगता था कि हर किसी का कोई न कोई खदान में खो गया है। मुझे आँसुओं से भरे चेहरे और अवरुद्ध शब्द याद हैं: "हम जो रख सकते हैं वह आशा ही है।" आशा निराशा का शब्द भी हो सकती है।

ऐसे समय रहे हैं जब हम में से अधिकांश लोग आशा के प्रति भयभीत रहे हैं, भय कि कहीं यह हमें धोखा न दे। जॉन ड्रायडेन के द्वारा लिखित निम्नलिखित पंक्तियाँ जीवन के वेग पर प्रहार करती हैं:

> जब मैं जीवन पर विचार करता हूँ, तो यह सब धोखा है;
> फिर भी आशा से धोखा खाकर मनुष्य धोखे का पक्ष करते हैं;
> भरोसा करते हैं, और सोचते हैं आने वाला कल इसे पूरा करेगा;
> आने वाला कल बीते हुए कल से भी अधिक झूठा है।
> असत्य और भी बुरा है और जबकि यह कहता है, हम किसी खुशखबरी से प्रसन्न होंगे, जो हमारे पास है उसे रोक देता है।
> अजीब छल-कपट! बीते समय में कोई नहीं रहेगा,

फिर भी सभी जो अभी है उसमें आनन्द करते हैं;
और जीवन के तल छट से कुछ लेने की सोचें,
जो पहले आनंदपूर्ण बह रहा है दे नहीं सकता।[40]

कभी-कभी आशा भ्रम होती है; कभी-कभी यह मूर्ख को बनाए रखती है। ठग व्यक्ति ही शीघ्र धनी होने के लिए लोगों की आशा के साथ खिलवाड़ करते हैं। लाखों लोग अपनी मेहनत का कमाया पैसा लॉटरी खरीदने के द्वारा मूर्खता से खेलते हैं। यह देखना कितना रुचिकर है कितने लोग लॉटरी की टिकट खरीदने, डॉक्टरों के पास जाने या वकील के पास जाने के लिए लाइन में लगते दिखाई देते हैं। कोई व्यक्ति समझता है कि जो लोग असमानता को समझते हैं वे टिकट नहीं खरीदते। मेहनत करनेवाले लोग जो टिकट खरीदने से असमानताओं पर विचार नहीं करते। जो लोग जीतना चाहते हैं उनके लोभ, निराशा और लापरवाही पर खेलने के लिए प्रणाली तैयार की गई है। कभी - कभी कोई व्यक्ति ऐसा कर पाता है - और कभी - कभी किसी व्यक्ति के अपने काम पर जाते हुए तेज रोशनी से इसका प्रहार होता है - परन्तु अक्सर ऐसा नहीं होता। राज्य संचालित लॉटरियाँ इस तरह से बनाई जाती हैं कि करोड़पतियों को कर अदा न करना पड़े। यही उनका आशय होता है।

एक मूर्ख आशा रखता है क्योंकि वह अज्ञान या आलसी है या दोनों ही है। निराश व्यक्ति आशा रखता है क्योंकि वास्तविकता को झेलना बहुत बड़ी बात है। एक समझदार व्यक्ति भी आशा रखता है। वह आशा रखता है क्योंकि कारण उसे आशा रखने के लिए कहता है। कष्ट झेले जा सकते हैं जब विश्वास करने के लिए कारण हो कि भविष्य में भला होगा। यह समझदार व्यक्ति की आशा है जिसे पतरस ने अपने पाठकों के समक्ष रखा है। प्रभु यीशु मृतकों में से जी उठा है। उन्होंने एक जीवित आशा में नया जन्म पाया है - जीवित आशा क्योंकि प्रभु यीशु जीवित परमेश्वर के रूप में राज्य करता है (1:3, 21)।

छुटकारा, नाशवान वस्तुओं से नहीं हुआ (1:18, 19)

हमारे समकालीन जगत की बहुत सी वस्तुएं चतुर, आधुनिक और साहसी होने का अनुमान लगाती हैं वे मात्र उसी अज्ञानता का विस्तार होती हैं जिसने जीवन को कुचला है और हज़ारों वर्षों से आनन्द को फटका है। विचारहीन इच्छाओं का पीछा करना दास बनाता है और नाश करता है। अपनी दूसरी पत्री में, पतरस ने उनके विषय लिखा जिनको स्वतन्त्रता की प्रतिज्ञा दी गई जब वे भ्रष्टाचार के दास थे: ". . . क्योंकि जो व्यक्ति जिससे हार गया है वह उसका दास बन जाता है।" (2 पतरस 2:19)।

पतरस की पहली पत्री में प्रेरित ने दासत्व और कमज़ोर पुराने जीवन की तुलना जिससे वे परिचित थे, उस स्वतंत्रता से की जिसका आनंद वे मसीह में आनन्द उठा रहे थे के बीच भिन्नता को सामने लाया जिसे वे जानते थे। पतरस ने अपने पाठकों को स्मरण करवाया कि वे छुड़ाए गए हैं। अनुवादित शब्द "छुड़ाए

गए" सांसारिक लेखकों के द्वारा यूनानी भाषा में फिरौती का भुगतान करने के लिए प्रयोग किया गया। किसी धनी या प्रभावशाली व्यक्ति को लुटेरों या डाकुओं के दल से धन देने का हुक्म। रोमी इतिहासकार ने 74 ई.पू. में जूलियस सीज़र के जीवन की एक घटना को बताया जब वह जब भाषण कला के अध्ययन के लिए रोड्स द्वीप पर गया। रास्ते में उसका समुन्द्री जहाज लुटेरों के हाथ पड़ गया। युवा सीज़र को मिलेटस नगर में भेज दिया गया ताकि उसकी फिरौती के लिए सोने के 50 सिक्के मिल जाएँ। मिलेटस ने वह मूल्य भर दिया और लुटेरों ने सीज़र को रिहा कर दिया।

धनी और प्रभावशाली लोगों की फिरौती सोने और चाँदी से होती थी, परन्तु पतरस ने अपने पाठकों को उनकी छुड़ौती के विषय बताया कि उनको इससे अमूल्य वस्तु का दाम चुका कर छुड़ाया गया है। फिरौती का दाम जिसे चुकाकर उन्हें शारीरिक इच्छाओं के दासत्व से छुड़ाया गया था वह किसी अन्य वस्तु से नहीं परन्तु परमेश्वर के पुत्र के बहुमूल्य लहू के द्वारा हुआ (1 पतरस 1:18, 19)। पौलुस ने 2 कुरिन्थियों 5:21 में इसी से मिलता जुलता वाक्य प्रयोग किया: "जो पाप से अज्ञात था, उसी को उस ने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।"

समाप्ति नोट्स

[1]क्रिया "होना" या "है" की आपूर्ति दोनों 1 पतरस 1:3 और मत्ती 21:9 में की गई है। पूर्णकालिक कृदंत εὐλογημένος *(युलोगेमेनोस)* का मत्ती 21:9 में अनुवाद "धन्य" हुआ है, जबकि पतरस ने विशेषण εὐλογητὸς *(युलोगेटोस)* का प्रयोग किया है। कृदंत क्रिया संबंधी विशेषण होता है। यह कहने में कि "धन्य है . . ." और अनिवार्यतः कहना कि "धन्य हो . . ." मध्य अंतर कम ही है। [2]यद्यपि कभी-कभी रब्बी में आने वाले नए व्यक्ति की तुलना एक नए जन्में शिशु से करते थे, फिर भी उन्होंने नए नियम में दिए गए नए जन्म के संदर्भों को ऐसे मूलभूत नैतिक और आत्मिक परिवर्तन के साथ कभी नहीं जोड़ा था। साक्ष्यों को परखने के पश्चात जी. आर. बीस्ले-मर्रे का निष्कर्ष था, ". . . मसीहियत से पहले, दोनों, यहूदी मत तथा यूनानी समन्वयता में, व्यक्ति के आत्मिक जीवन के नवीनीकरण की धारणा बहुत असामान्य थी।" (जी. आर. बीस्ले-मर्रे, *बैप्टिज़्म इन द न्यू टेस्टमेन्ट* [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैन्स पबलिशिंग कं., 1962], 227). [3]उपरोक्त, 228. [4]जॉर्ज एल्डन लैड्डु केवल आंशिक रूप में ही सही थे जब उन्होंने लिखा, "पौलुस विश्वासियों को परमेश्वर की सन्तान होना नए जन्म के द्वारा नहीं वरन लेपालक होने के द्वारा मानता है (रोमियों 8:15)" (जॉर्ज एल्डन लैड्डु, *ए थियोलाँजी ऑफ द न्यू टेस्टामेन्ट,* 2 संस्करण [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैन्स पबलिशिंग को., 1993], 664)। पौलुस ने दोनों, लेपालकपन और नए जन्म के रूपकों का प्रयोग किया, जैसा तीतुस 3:5 स्पष्ट करता है। रोमियों 8:15, 16 में लेपालकपन का रूपक प्रयोग करने के द्वारा पौलुस ने विश्वासियों की मसीह में होकर परमेश्वर से संबंध की दृढ़ता के विषय आश्वस्त किया। दोनों रोमियों 6:1-4 और तीतुस 3:5 में, विषयवस्तु वह मूलभूत परिवर्तन था जो मसीही बनने से आता है। एक और इसका इसका अर्थ है पुराने मनुष्यत्व के लिए मर जाना और, दूसरी और इसका अर्थ है नये सिरे से जन्म लेना। [5]जे. एन. डी. केली, *ए कमेंट्री ऑन द इपिस्टल्स ऑफ पीटर एण्ड जूड,* ब्लैक्स न्यू टेस्टमेन्ट कॉमेन्ट्रीस (लंडन: एडम & चार्ल्स ब्लैक, 1969), 46. [6]डेविड इवर्ट, *एन्ड देन कम्स द ऐन्ड* (स्कॉट्सडेल, पीए.: हैरल्ड प्रेस, 1980), 173. [7]एफ. जे. ऐ. हॉर्ट, *द फर्स्ट एपिस्टल ऑफ सेंट पीटर I. 1-II. 17: द ग्रीक टैक्स्ट*

विद द इन्ट्रोडक्टरी लेक्चर, कॉमेन्ट्री एण्ड एड्डिशनल नोट्स (न्यू यॉर्क: मैकमिलन कंम्पनी, 1898), 38. [8]कैली, 46. [9]देखें जे. रैमसे माईकल्स, *1 पीटर,* वर्ड बिबलिकल कॉमेन्ट्री, वॉल. 49 (वाको, टैक्सस.: वर्ड बुक्स, 1988), 29. [10]पतरस द्वारा शासनों के लिए दिए गए निर्देशों को नए नियम में बारंबार प्रथा समान दिए जाने वाले घरेलू निर्देश समझ कर टाल नहीं देना चाहिए। जो निर्देश इफिसियों 5; 6 तथा कुलुस्सियों 3; 4 में पाए जाते हैं उनमें शासन का कोई उल्लेख नहीं है। पतरस ने घरेलू निर्देशों के शब्दों को अनुकूलित किया जिससे वे उसके पाठकों की आवश्यकताओं और चिंताओं को पूरा कर सकें।

[11]केली, 46. [12]जॉन स्टॉट, *द कोंटेपोररी क्रिश्चियन* (लेसेस्टर, यू.के.: इंटर - वर्सिटी प्रेस, 1992), 157. [13]कृदंत का एक आज्ञासूचक कारक हो सकता है, विशेषकर तब जब आज्ञासूचक का बार-बार प्रयोग किया जाता है। [14]एडवर्ड गॉर्डन सेल्विन, *द फर्स्ट एपिसल ऑफ़ सेंट पीटर: द ग्रीक टेक्स्ट, विथ इंट्रोडक्शन, नोट्स, एण्ड एसेज,* थोरनापल कॉमेंटरीज, 2ड एड. (लंडन: मैकमिलिन एण्ड कं., 1947; रीप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1981), 131. [15]उपरोक्त, 260. ड्यूएन वार्डन, "द प्रोफेट्स ऑफ़ फर्स्ट पीटर 1:10-12," भी देखें। *रेस्टोरेशन क्वार्टरली* 31 (फर्स्ट क्वार्टर 1989): 1-12. अधिकतर कॉमेंटरी सेल्विन को संदर्भित करते हैं जब वे इस अध्याय के भविष्यद्वक्ताओं को सम्बोधित करते हैं बेसक वे ऐसा केवल उसे खंडन करने के लिए कर रहे हों। वे सफल हुए या नहीं हुए हैं। जैसा कि माइकल्स को लगता है 1:10 में εἰς ὑμᾶς (*eis humas*) को लगाने से समस्या हल नहीं हो जाती। (माइकल्स, 44.) 1:10 में अनुग्रह मसीहियों के लिये है, जिस प्रकार 1:11 में दुःख मसीह के लिये है। [16]विद्वानों के काम का एक बड़ा बातचीत का विषय प्रश्न पर छोड़ दिया गया है चाहे नए नियम के भविष्यद्वक्ता कलीसिया में पदस्थ सदस्य थे या नहीं (जैसा कि सम्भवतः 1 कुरिन्थियों 12 में संकेत किया गया है) या घुमक्कड़ थे या नहीं (जैसा कि यूहन्ना की पत्री और डिडेक में सुझाया गया है)। आगे के अध्ययन के लिये, डेविड हिल, *न्यू टेस्टामेंट प्रोफेसी* (अटलांटा: जॉन नॉक्स प्रेस, 1979),104-9 पड़े। [17]केली, 59. [18]होर्ट ने लिखा, "समर्थन और स्वीकृती का अर्थ विशेष रूप से वाचा में अन्यजातियों को सम्मिलित करने के लिये दिखाया गया समर्थन, होना चाहिए" (होर्ट, 49). [19]एक विपरीत दृष्टि के लिये देखें वेय्ने ए. ग्रुडेम, *द फर्स्ट एपिसल ऑफ़ पीटर: एन इंट्रोडक्शन एण्ड कॉमेंटरी,* टिंडेल *न्यू टेस्टामेंट कॉमेंटरीज,* वॉल्यूम 17 (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1988), 69-71. ग्रुडेम का अनुच्छेद के व्याकरण का कठोरतापूर्वक रखरखाव करना पढ़ने के लिए दर्दनाक है। प्रश्नों के कमजोर प्रस्तुति एक कठोरतापूर्वक तर्क वितर्क कि सेल्विन उस अनुच्छेद को सही ढंग समझ चुका है। [20]अल्बर्ट कैमस जैसे लेखक के बारे में ध्यान देने वाली बात यह है कि वह परमेश्वर में विश्वास की अनुपस्थिति में शालीनता की इच्छा रखते हैं। "द मिथ ऑफ़ सिसीफस" कैमस ने दावा किया, "उन सार्वभौमिक कारणों, व्यावहारिक हो या नैतिक, जो निर्धारकवाद, उन श्रेणियों को जो व्याख्या करते हैं कि एक सभ्य मनुष्य को हँसाने के लिये सब कुछ पर्याप्त है" (अल्बर्ट कैमस, *द मिथ ऑफ़ सिसिफस, एंड अदर एसेज़,* ट्रांस. जस्टिन ओ'ब्रायन [न्यूयॉर्क: विन्टेज बुक्स, 1955], 16), सुखवादी के साधारण नास्तिकवाद के विपरीत, कैमस के चेहरे पर जीवन को स्पष्ट रूप से देखने और परमेश्वर से इनकार करने का साहस था। उन्होंने मानवीय जीवन को मूर्खतापूर्ण, दुःख से भरा, और निराशाजनक पाया।

[21]इसके अतिरिक्त, इस संदर्भ से पता चलता है कि यूनानी कृदन्तों "अपनी बुद्धि की कमर बाँधकर" (1:13) और "के सदृश न बनो" (1:14) अनिवार्यता के बल के साथ प्रयोग किया जाता है। [22]सेमीटिक मुहावरा के लिए 2 शमूएल 7:10 देखें, जहाँ इब्री "दुष्टता के सन्तान" को अंग्रेजी में "दुष्ट" के रूप में अनुवाद बताता है (तुलना करें मत्ती 8:12, "राज्य के सन्तान" और इफिसियों 2:3, "क्रोध के सन्तान")। [23]इस अध्याय में सुसकेमाटिज़ो/मेनोई (*सुसकेमाटिज़ोमेनोई*) है, जो तकनीकी रूप से एक कृदन्त है, परन्तु यहाँ इसका प्रयोग अनिवार्यता के बल के साथ किया गया है। [24]माइकल्स, 51. [25]ग्रडेम, 79. [26]तदानुसार, 80. [27]लड, 564. [28]अर्नेस्ट बेस्ट, *1 पतरस,* द न्यू सेन्चूरी बाइबल कॉमेंटरी (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी,

1971), 87. [29]जॉन एच. इलियट, *होम फॉर द होमलेस: अ सोशियोलोजिकल एक्सिजीसिस ऑफ 1 पीटर, इट्स सिचुएशन एण्ड स्ट्रेटेजी* (फिलाडेल्फिया: फोर्ट्रेस प्रेस, 1973), 42. [30]बेस्ट तर्क देते हैं कि जैसे पतरस ने शब्द का प्रयोग किया था यह बलिदान के मोल का नहीं, छुटकारे का एक संदर्भ था। (बेस्ट, 89.)

[31]फ्रांसिस राइट बीयर ने लूटरूमाई शब्द परिवार के सम्पूर्ण चर्चा का विवरण पुराना नियम और अन्य जाति संसार दोनों में प्रस्तुत किया। (फ्रांसिस राइट बीयर, *द फर्स्ट इपिसल ऑफ़ पीटर: द ग्रीक टेक्स्ट विथ इंट्रोडक्शन एण्ड नोट्स*, 3र्ड एड. [ऑक्सफोर्ड: बेसिल ब्लैकवेल, 1970], 103-5.) [32]नया नियम में NASB शब्द "प्रायश्चित्त" का उपयोग नहीं करता है। KJV में यह एक बार रोमियों 5:11 में आया है। एनआरएसवी में रोमियों 3:25; इब्रानियों 2:17 इस शब्द का प्रयोग करता है। NIV में रोमियो 3:25; इब्रानियों 2:17; 9:5 में मिलता है। [33]माइकल्स, 66-67. [34]रोबर्ट एच. गण्ड्री, "'वेर्बा क्रिस्टी' 1 पीटर में; देयर इम्पलिकेशन कन्सर्निंग दि ऑथरशिप ऑफ 1 पतरस एण्ड दि अथेनसिटी ऑफ दि गॉस्पल ट्रेडीशन," न्यू टैस्टामेंट स्टडीज़ 13 (जुलाई 1967): 339-40. [35]रेमण्ड सी. केल्सी, *दि लैटर ऑफ पीटर एण्ड ज्यूड,* दि लिविंग वर्ड कमैंट्री, वाल. 17 (ऑस्टिन, टेक्सासः आर. बी. स्वीट कम्पनी, 1972), 38. [36]कैली, 78. [37]NASB प्रेरितों 2:40 का सामान्य कर्मवाच्य आज्ञार्थक क्रिया के रूप में अनुवाद करता है, "इस टेढ़ी जाति से बचे रहो।" एक प्रश्न उठता है, "एक व्यक्ति कैसे सार्थक रूप से कुछ ऐसा करने का आदेश देता है जिसमें सुनने वाले पूर्ण रूप से निष्क्रिय हैं?" कर्मवाच्य आज्ञार्थक क्रियाएँ, - "सुनो," "प्राप्त करो," और इस तरह के, वास्तव में, यह निर्देशवाचक बल है, "तुम्हारे द्वारा सुना जाए," या "तुम्हारे द्वारा प्राप्त किया जाए।" प्रेरितों के काम 2:40 में यही पतरस का अर्थ था। उसके कहने का अर्थ था कि उसके सुनने वाले स्वयं बच जाएँ। यह बात थी पतरस उनको वह कुछ करने के लिए आदेश दे रहा था जिनमें उनके अपने निर्णय ने सहयोग देना था। इसी भाव में पतरस के सुनने वालों को "स्वयं को बचाना था।" [38]माइकल्स, 75. [39]जॉन बार्टलेट, *फेमलियर कुटेशनस*, 15वीं संस्करण, रिवाइज्ड एण्ड एनलार्जड, सम्पादन इमली मोरिसन बेक (बोस्टोनः लिटल, ब्राऊन एण्ड कम्पनी, 1980), 179. [40]जॉन ड्रायडेन *औरेंग-ज़िबे* 4.1.